# उपकार का बदला

## देश-देश की लोककथाएँ

### बर्मा

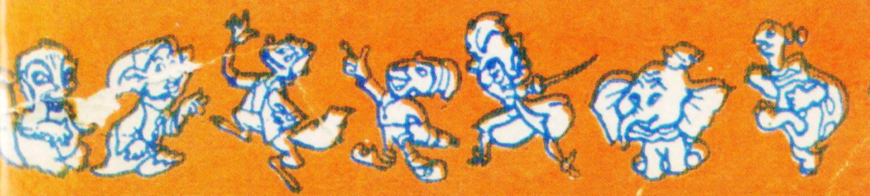

# उपकार का बदला

ब्रह्मदेश की शिक्षाप्रद
और रोमांचक कथाएं

•

लेखक
**ओम प्रकाश**

•

सस्ता साहित्य मण्डल

१९६३
सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन

ISBN 81-7309-006-8

© सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन

•

*प्रकाशक*

**सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन**

एन-77, पहली मंजिल, कनॉट सर्कस, नई दिल्ली-110001

*Publisher*

**Sasta Sahitya Mandal Prakashan**

N-77, First Floor, Connaught Circus, New Delhi-110 001

फोन / Phone : 23310505, 41523565

Visit us at : www.sastasahityamandal.org

E-mail : sastasahityamandal@gmail.com

शाखा : कमला सदन, पटना साइंस कॉलेज के सामने, अशोक राजपथ, पटना-800 006 (बिहार)

फोन : 0612-2678025

•

संस्करण : 2019

**मूल्य : 50/-**

•

मुद्रक : सोना स्टेसनर्स, 7231, रूपनगर, दिल्ली-110007

---

UPKAR KA BADALA

*by* OM PRAKASH

Price : Rs. 50/-

# प्रकाशकीय

'सस्ता साहित्य मण्डल' से हमने हिन्दी तथा उसके परिवार की अन्य भाषाओं की चुनी हुई लोक-कथाओं की लगभग एक दर्जन पुस्तकें प्रकाशित की हैं। इन पुस्तकों की पाठकों ने भूरि-भूरि प्रशंसा की है। उनकी लोकप्रियता का अनुमान इस बात से किया जा सकता है कि उस माला की प्रायः सभी पुस्तकों के एकाधिक संस्करण हो गये हैं।

उसी से प्रेरित होकर हमने प्रस्तुत नई पुस्तक-माला आरम्भ की है। इसमें विभिन्न देशों की चुनी हुई लोक-कथाओं को प्रकाशित किया जा रहा है।

पाठक देखेंगे कि लोक-कथाओं में कितना साम्य होता है। यदि कहानियों के परिवेश तथा पात्रों के नामों में अंतर न हो तो पता ही नहीं चलता कि कौन कथा किस देश की है।

इस माला की पहली पुस्तक 'मारीशस की शकुन्तला' में मारीशस की लोक-कथाएं दी गई हैं। दूसरी, तीसरी और चौथी में क्रमशः रूस, चीन और चेकोस्लोवाकिया की। पांचवीं पुस्तक में बर्मा की लोक-कथाएं हैं। आगे इण्डोनेशिया, थाईलैंड, कनाडा आदि देशों की लोक-कथाएं प्रकाशित होंगी।

इस पुस्तक की अधिकांश कथाएं बुद्धिमानी और चातुर्य की हैं, साथ ही मनोरंजक तथा शिक्षाप्रद भी।

आशा है, ये कथाएं एक देश की संस्कृति, कला और संवेदना को दूसरे देश की संस्कृति, कला और संवेदना से जोड़ने में सहायक होंगी तथा चाव से पढ़ी जायंगी।

**–मंत्री**

# सम्पादकीय

इस पुस्तक में ब्रह्मदेश की इक्कीस चुनी हुई लोक-कथाएं संग्रहीत हैं। इनमें जहां अधिकतर धैर्य, साहस और चातुर्य का दर्शन कराती हैं, वहां कुछेक में दुराग्रह, ईर्ष्या तथा बुराई के दुष्परिणामों और सद्‌भावनाओं के सुपरिणामों की स्पष्ट झलक है। कथाओं का उद्देश्य जो भी हो, वे इतनी शिक्षाप्रद और रोमांचक हैं कि एक बार पढ़ना आरंभ करने पर बिना पूरी पढ़े छोड़ पाना असंभव है। कुछ कथाओं में पात्रों के नाम भी ब्रह्मदेश के ही रखे गये हैं।

लोक-कथाएं जन-जीवन से जुड़ी हुआ करती हैं। इनके पात्र राजा से लेकर रंक तक होते हैं। इन कथाओं में भी ब्रह्मदेश का लोक-जीवन बोलता है। पढ़ते-पढ़ते ब्रह्मदेश की भूमि और वहां के लोग आखों के सामने आ जाते हैं।

हमारी हार्दिक इच्छा है कि पाठक इन कथाओं को स्वयं तो पढ़ें ही, अपने परिवार के सदस्यों तथा इष्ट-मित्रों और बंधु-बांधवों को भी पढ़ने के लिए प्रेरित करें।

कथाओं की भाषा सुबोध, सरस तथा सरल है। इसलिए इन्हें सामान्य पाठक भी बड़ी आसानी से समझ सकते हैं।

**– संपादक**

# अनुक्रम

□


१. उपकार का बदला / ९
२. छोटे बालक निडर हैं / १२
३. काठ की हांडी / १५
४. चोर पर मोर / २१
५. नारियल का जन्म / २५
६. तीन हाथ की नाक / २८
७. कुटिल कमल किशोर / ३२
८. पगान नगर का ज्योतिषी / ३९
९. चन्द्र-ग्रहण / ४३
१०. विद्वान न्यायाधीश / ४७
११. चार शेखचिल्ली / ५३
१२. चन्द्रलोक का बूढ़ा / ५८
१३. महामूर्ख / ६०
१४. वे पांच / ६६
१५. डड्डोरानी / ६९
१६. न्यायमूर्ति शशा / ७५
१७. खोपड़ीराज / ७८
१८. विपत्ति का सामना / ८२
१९. अंगुष्ठराज / ८६
२०. इन्द्रधनुष / ९०
२१. सबसे बड़ा मूर्ख / ९४


□□

लोक-कथाओं का चलन प्राचीन काल से है। इन कथाओं में लोक-जीवन की झांकी मिल जाती है। किसी समय में दिन के कार्यों से छुट्टी पाकर कुछ लोग मिलकर बैठ जाते थे। एक आदमी कहानी कहता था, बाकी के लोग सुनते थे। कहानियां लम्बी होती थीं, छोटी भी। कहानी कहने वाला उनमें इतना रस उत्पन्न कर देता था कि सुनने वाले मंत्रमुग्ध होकर सुनते थे। कहानियों की भाषा बोलचाल की होती थी, जिसे बिना पढ़े लोग भी सहज ही समझ सकते थे।

कहानियां किसी भी देश की हों, सबके लिए होती हैं। वे आदमी आदमी के बीच भेद नहीं करती। यद्यपि आज लोगों के पास इतना अवकाश नहीं है कि मिल-बैठकर कहानियां सुनें, फिर भी लोककथाओं की उपयोगिता कम नहीं हुई है।

# उपकार का बदला

# उपकार का बदला

एक लकड़हारा था। उसका नाम था रामधन। एक दिन जंगल में लकड़ी काटने गया। उसे किसी के चिल्लाने की आवाज सुनाई दी, "बचाओ ! बचाओ !" उसने इधर-उधर देखा तो पता लगा, आवाज एक कुएं से आ रही है। उसके अन्दर झांककर देखा, पर उसमें एक बाघ, एक सांप, एक बन्दर और एक मनुष्य दिखाई दिये।

बाघ बोला, "अरे भले आदमी, मुझे बचा लो। मैं तुम्हें कोई कष्ट नहीं दूंगा।" रामधन ने उरा पर विश्वास कर एक रस्सी लटकाई और उसे बाहर निकाल लिया।

बन्दर बोला, "मैं नदी के पास वाले बड़े पेड़ पर रहता हूं। मुझे कभी-कभी दर्शन दिया करें।"

रामधन ने फिर सांप को भी बचा लिया। सांप ने कहा, "मैं राजमहल के बाग में रहता हूं। जब कभी आपको मेरी सेवा की आवश्यकता हो मुझे याद करें। मैं नहीं चूकूंगा।"

अन्त में, मनुष्य को भी बाहर लाने में सफलता मिली। वह एक सुनार था। सुनार ने अपना परिचय देते हुए बताया, "मैं राजधानी का प्रसिद्ध सुनार हूं। जब कभी मेरी जरूरत पड़े, मैं आ जाऊंगा। मैं हीरे-जवाहरात, सोने-चांदी का व्यापार करता हूं। कभी कुछ खरीदना या बेचना हो तो मेरी सेवा का लाभ उठा लेना।"

कुछ दिन बाद रामधन का फिर जंगल में जाना हुआ। उसे प्यास लगी। वह पास बहती नदी में पानी पीने गया। जब वह पानी पी रहा था, उसने किसी को यह कहते सुना कि मेरे प्राण बचाये जाने के एवज में इसके लिए कुछ-न-कुछ करूंगा।

यह बंदर था। उसने कुछ फल लाकर दिये और कहा, "आप निःसंकोच खाइये।" इसके बाद फिर वह बाघ के यहां ले गया। बाघ ने कुछ सोने के आभूषण रामधन को दिये। रामधन ने पूछा, "ये कैसे आये ?"

उसने कहा, "एक दिन एक राजकुमार यहां शिकार खेलने आया। उसने मुझ पर बाण चलाया, पर मैं बच गया। और हां, मैंने राजकुमार को मार डाला। उसके शरीर को खा गया। ये गहने उसी के हैं। आपने मेरे प्राण बचाये थे। इन्हें लेलें। मेरे तो ये किसी काम के हैं नहीं।"

रामधन ने गहने ले लिये और उन्हें सुनार के पास ले गया। सुनार ने देखकर कहा, "ये गहने तो राजकुमार के हैं। इन्हें राजा को देदें, वह प्रसन्न होंगे।"

राजा ने गहने देखे तो कहा, "ठीक है, पर ये गहने जिसने दिये हैं, उसे पकड़कर मेरे पास लाओ। इसी आदमी ने मेरे पुत्र को मारकर गहने छीने होंगे।"

बेचारा रामधन पकड़ा गया और कैदखाने में डाल दिया गया।

सांप ने देखा कि यह वही आदमी है, जिसने मुझे बचाया था। उसके मन में इसकी सहायता करने की इच्छा जागी। सांप रामधन की कोठरी में गया और कहा, "यह दवा लो। यह सांप के विष को नष्ट करने की दवा है। काम आयगी।"

एक-दो दिन बाद रानी बाग में सैर करने आई। देखकर सांप ने उसे डस लिया और रानी मरने जैसी हो गई। राजा घबराया। उसने ढिंढोरा पिटवाया कि अगर कोई रानी को बचा लेगा तो उसे बहुत-सा इनाम दिया जायगा।

रामधन ने जेल के अधिकारियों द्वारा सूचना दी कि वह सांप के काटे का विष उतार सकता है।

राजाज्ञा से उसे बुलाया गया और उसके इलाज से रानी स्वस्थ हो गई। राजा बड़ा प्रसन्न हुआ और उसने रामधन का मृत्युदंड माफ कर दिया और उसे इनाम देकर विदा कर दिया।

# छोटे बालक निडर हैं

रतनपुर नगर का राजा बड़ा प्रतापी था। उसका मन्त्री भी बहुत चतुर था। मंत्री हमेशा ही राजा को उचित सलाह देता। उनके शासन में सबलोग सुख और चैन से रहते थे। सेना का पदाधिकारी भी कुशल सेनापति था। यदि कोई किसान मेहनत कर अपने खेत में

अच्छी उपज करता तो उसे इनाम दिया जाता। कोई अफीम आदि मादक द्रव्यों का व्यापार करता तो उसे दण्ड दिया जाता। जो अध्यापक बच्चों को अच्छे नागरिक बनना सिखाते, उन्हें पुरस्कृत किया जाता।

यह सब देखकर एक दिन राजा ने मंत्री से पूछा, "देखो, मेरे देश में मेरे बल और सामर्थ्य से जनता को कितना सुख मिल रहा है ! क्या कोई मेरी शक्ति का विरोध कर सकता है ? है कोई इतना निडर ?"

मंत्री ने नम्रता से उत्तर दिया, "महाराज, आपसे बढ़कर निर्भय एक और है।"

राजा ने पूछा, "कौन है ? कहां है ? मुझे शीघ्र बताओ।"

मंत्री ने कहा, "छोटे बच्चे से बढ़कर कोई निडर नहीं होता है।

राजा बोला, "क्या व्यंग्य कर रहे हो ? सिद्ध करके दिखाओ कि तुम्हारी बात ठीक है, नहीं तो दण्ड पाओगे। मैं तुम्हें सात दिन का समय देता हूं।"

मंत्री निश्चिन्त होकर अपने काम में लगा रहा। सातवें दिन राजा साहब अपनी बैठक में आये। नगर के गणमान्य लोगों से बातें करने लगे। इतने में धाय आई। उसकी गोद में राजा का छोटा पोता था। उसने बच्चा राजा की गोद में रख दिया।

राजा प्रसन्न हुआ कि कितना प्यारा है !

बच्चा भी खेलने लगा। खेलते-खेलते उसने राजा के एक लात मार दी। राजा 'हां-हां' कर हंसने लगा। कुछ देर बाद खेलते-खेलते

बच्चे ने पेशाब कर दिया। राजा हंसता रहा। बोला, "अरे, मेरे कपड़े भी गन्दे कर दिये तुमने !" इतना कहकर उसे प्यार किया, फिर मंत्री से कहा, "मंत्रीजी, क्या आज का दिन भाग्यशाली नहीं है कि मैं पोते को खिला रहा हूं ?"

मंत्री बोले, "महराजजी, ये बच्चे बड़े प्यारे और निर्दोष होते हैं। ये बड़ों को लात भी मार देते हैं, उनके कपड़े भी गन्दे कर देते हैं। फिर भी प्यार पाते हैं। आपका रौब और डर तो बड़ों के लिए ही है। इनका तो कोई भी विरोध नहीं करता।" अंत में मंत्री ने कहा, "महाराज, मेरी बात सच हो गई। बच्चे आप से भी नहीं डरते।"

राजा को मंत्री की बात ठीक लगी और उसने मंत्री को इनाम दिया।

# काठ की हांडी

मौं कौकू और मौं लइं दोनों ही अव्वल दर्जे के धूर्त थे। एक बार उन्होंने काफी सोचने के बाद तय किया कि चालाकी करके कुछ धन कमाना चाहिए। यह सोचकर वे एक गांव में गए। वहां उन्होंने

एक बैल चुराया और उसे छिपा दिया। बैल का मालिक ऊसू बैल को ढूंढ़ते-ढूंढ़ते परेशान हो गया। इसी बीच उसकी भेंट मौं कौकू से हो गई। उसकी बात सुनकर मौं कौकू बोला, "अरे ऊसू ! गांव में मौं लइं नाम के एक बड़े ज्योतिषी आये हैं। बैल का पता नहीं लगता तो उनसे पूछो, वह बता देंगे। वह मन्दिर की साथ वाली धर्मशाला में कल ही आकर ठहरे हैं।"

बेचारा ऊसू ज्योतिषी मौं लइं के पास गया। बैल का रंग-रूप बताया। मौं लइं ने पोथियों के पन्ने उलट-पलट कर कहा, "इस धर्मशाला की पूर्व दिशा में सीधे जाओ। आम का एक बड़ा पेड़ मिलेगा। वहां से दाहिने घूम जाना। आम का एक बड़ा पेड़ मिलेगा। वहां से दाहिने घूम जाना और सीधे चलते जाना। तब इमली का एक पेड़ मिलेगा। फिर उत्तर की ओर मुड़ना और बरगद के पेड़ तक चलते जाना। वहां तुम्हारा बैल मिले तो मुझे दस रुपये दे देना। न मिले तो मैं झूठा ठहरूंगा और मुझे कुछ न देना।"

ऊसू उसी प्रकार चलता गया। उसे बैल मिल गया। वापस आकर उसने ज्योतिषी को धन्यवाद दिया और चांदी के दस रुपये भी भेंट किये। मौं कौकू और मौं लइं शाम को अपने घर जाने की तैयारी कर रहे थे कि गांव का मुखिया आया और कहने लगा, "मैं उस महान ज्योतिषी से भेंट करना चाहता हूं, जिसने ऊसू के बैल का पता बताया है। गांव भर में उसकी होशियारी की चर्चा हो रही है। कल रात मेरा सोने का पानदान चोरी हो गया है। मैं उसका पता लगवाना चाहता हूं।"

मौं कौकू ने कहा, "श्रीमान्, अभी ग्रह सलाह देने की स्थिति में नहीं हैं। आप कल प्रातः आयं तो हम उसका पता बतायंगे।

इस बात से दोनों ही धूर्त डर गये कि कहीं उनकी ठगी का पता न लग जाय। इसलिए दोनों ने भाग निकलने की ठानी। मौं कौकू बोला, "अरे, अभी दिन में भागेंगे तो गांव के लोग पीछा करेंगे। रात होने दो।"

रात हुई। मौं लइं ने कहा, "चलो, अब चलते हैं।"

मौं कौकू बोला, "चांद तो निकलने दो, अन्धेरे में कहां भटकोगे?"

संयोग की बात कि एक चोर भी उसी धर्मशाला में छिपा हुआ था। वह यह पता करने आया था कि ज्योतिषी ने चोर का पता लगा लिया अथवा नहीं। मौं लइं कह रहा था, "तुमने नाहक मुझे इस झंझट में फंसा दिया। अब देखो, हमें गांव छोड़कर भागना पड़ रहा है।"

मौं कौकू बोला, "अरे, मुझे क्यों दोष देते हो, दोष तो भाग को दो, जिसके कारण यह सब हुआ है।"

चोर को काटो तो खून नहीं। उसका नाम भागदीन था। वह डरता-डरता ज्योतिषी के सामने हाथ जोड़कर खड़ा हो गया। बोला, "गुरुवर, मैंने ही वह डिब्बा चुराया है। वह श्मशान भूमि में बने चबूतरे की सीढ़ी के पास गड़ा है। मुझे क्षमा कर दें। मुखिया के हवाले न करें।"

मौं कौकू ने कहा, "अच्छा, अच्छा, अब तुम यहां से जल्दी से चले जाओ। कहीं ग्रहों की चपेट में आ गये तो बच नहीं पाओगे।" भागदीन तुरन्त वहां से चला गया।

दूसरे दिन मुखिया आया। मौं कौकू ने उनके चोरी गये डिब्बे के मिलने का पता बताया। मुखिया को सोने का डिब्बा मिल गया। उसने मौं कौकू को एक सौ स्वर्ण मुद्रा भेंट में दीं और घर पर भोजन का निमंत्रण भी दिया।

दोनों धूर्त मुखिया के घर से भोजन करके निकल ही रहे थे कि राजा के एक कर्मचारी ने आकर मुखिया को सूचना दी, "एक धनी व्यापारी सात जहाज लेकर आया है। जहाजों में बहुमूल्य गहने और हीरे-जवाहरात हैं। उसने हमारे राजा से शर्त लगाई कि 'मेरे पास लोहे की एक सन्दूकची है। अगर आप या आपका कोई ज्योतिषी बता दे कि उसमें क्या है तो सारा धन आपका हो जायगा। अगर न बता सके तो आप अपना राज्य हमें सौंप देंगे।' हमारे राजा ने यह शर्त स्वीकार कर ली है। बाद में राजा के राज-ज्योतिषी ने कहा, "वह इस गुत्थी को सुलझा नहीं सकेगा।" अब राजा को चिन्ता हो गई है। राजा ने आप को कहलवाया है कि कोई योग्य ज्योतिषी भेजें, जो उस व्यापारी के प्रश्न का उत्तर दे सके।"

मुखिया ने कहा, "आप इन ज्योतिषीराज को राजा के पास ले जायं। यह अवश्य ही बता सकेंगे कि सन्दूकची में क्या है?"

मौं कौकू और मौं लइं राजा के दरबार में उपस्थित किये गये। उन्होंने कहा, "हुजूर, हमें सात दिन का समय दीजिये। हम आपको उस सन्दूकची में पड़ी सामग्री का पता दे देंगे।"

राजा प्रसन्न हुआ और दोनों के लिए एक सुन्दर घर, बहुत-से नौकर-चाकर तथा भोजनादि का प्रबन्ध कर दिया।

दिन बीतते गये। अब एक दिन बचा था। मौं लइं ने कहा, "भाई, हम लोग राजसी ठाठ से इतने दिन रह चुके हैं। खूब मौज उड़ाई है। अब हम भाग तो सकेंगे नहीं। चलो, समुद्र में कूद पड़ें।"

मौं कौकू बोला, "हमें तैरना तो आता है। लेकिन अगर मर गये तो आत्म-हत्या का पाप लगेगा।"

मौं लइं बोला, "हम समुद्र में कूद पड़ें और तैरते जायं। जब हम बिल्कुल थक जायंगे तो अपने आप ही मर जायंगे।"

इसके बाद वे समुद्र में जाकर तैरने लगे। एक जहाज के पास से आवाज आई, कोई बच्चा बोल रहा था, "दादाजी, दादाजी, आप तो व्यापारी के बड़े बावर्ची हैं। आप को तो पता होगा कि उस सन्दूकची में सेठ ने क्या रखा है।"

दादा बोले, "बच्चे, यह तुम्हारे जानने की बात नहीं हैं। क्या करोगे यह सब जानकर?"

बच्चा जिद करने लगा, "नहीं दादा, बताओ, नहीं तो मैं रोता ही रहूंगा।"

बच्चे ने बहुत जिद्द की तो दादा ने उसे बता दिया। दोनो धूर्तों ने इस बातचीत को सुन लिया। मन-ही-मन खुश हुए। फिर क्या था, वापस किनारे पर आ गये और चादर तान कर सो गये।

दूसरे दिन दरबार लगा। राजा साहब के सामने ज्योतिषी, गुरु तथा चेला उपस्थित हुए।

मौं कौकू ने आखें मूंदीं। कुछ गुनगुनाने लगा। जमीन पर लकड़ी से कुछ रेखाएं खींचीं; कुछ सीधी, कुछ गोल-मटोल। फिर

बोला, "महाराज ! व्यापारी की सन्दूकची लोहे की बनी है। उसमें एक पीतल की पिटारी है। पिटारी में चांदी की डिबिया है। उस डिबिया में सोने की एक सुन्दर डिबिया है। इस सोने की डिबिया में बहुत ही खुशबूदार इत्र है।"

व्यापारी शर्त हार गया, क्योंकि सन्दूकची में सबकुछ वैसा ही था, जैसा ज्योतिषी ने बताया था। उसने अपनी सारी सम्पत्ति राजा के हवाले कर दी और चला गया।

राजा ने मौं कौकू को अपना राज-ज्योतिषी नियुक्त कर लिया और बातचीत करने के लिए राजमहल में ले गया। इधर मौं लइं ने सोचा, इतने दिन तो धूर्तता चलती रही। अब यह काठ की हांडी नहीं चलेगी। वह तुरंत अपने नये घर गया और घर को आग लगा दी। हाथ भी कुछ जला डाले। रोता-चिल्लाता, दौड़ता अपने गुरु मौं कौकू के पास गया। बोला, "गुरुजी, घर में आग लग गई। सारी पुस्तकें जल गईं। बचा नहीं पाया। देखिये, मेरे हाथ भी झुलस गये हैं।"

मौं कौकू छाती पीटने लगा, "अरे, हम तो लुट गये, अब मैं क्या करूंगा ? भविष्यवाणी कैसे करूंगा ? सारी विद्या तो पोथियों में थी।"

राजा ने सुना तो सांत्वना देते हुए कहा, "भई, घबराओ मत। हम तुम्हें दूसरा काम देंगे।"

इसके बाद राजा ने एक को मंत्री पद दिया और दूसरे को सेनापति का। दोनों धूर्त्त मजे में रहने लगे।

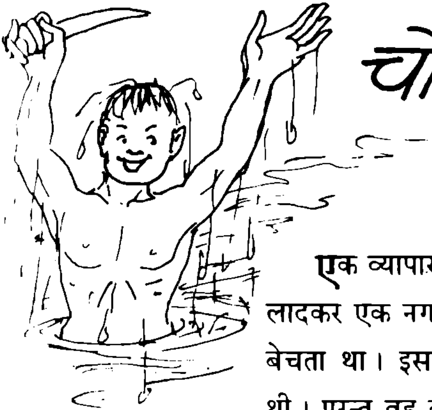

# चोर पर मोर

एक व्यापारी था। वह बड़ी नावों पर माल लादकर एक नगर से दूसरे नगर ले जाता और बेचता था। इससे उसकी कमाई अच्छी होती थी। परन्तु वह कंजूस भी था और बेईमान भी था। वह अपने नाव चलाने वाले मल्लाहों को उनका पूरा वेतन नहीं देता था। जब उनके वेतन कई महीने के बाकी हो जाते तो कोई-न-कोई चालाकी करके इन्हें ठग लेता था।

एक बार वह बोला, "जब हम मंजिल पर पहुंच जायंगे तब हम परीक्षा करेंगे कि कौन नाविक सबसे तगड़ा है।" जनवरी का महीना था। ठण्ड जोर से पड़ रही थी। उसने कहा,

अगर कोई इस नदी में कमर तक पानी में सारी रात खड़ा रहेगा तो वही सबसे बहादुर होगा और उसे दो नाव का सामान इनाम में दिया जायगा। अगर खड़ा न रह सका तो उसे इतने दिनों की बकाया तनख्वाह को नहीं दिया जायगा।"

सारे नाविक कष्ट सहन करने के आदी थे, परन्तु वे उसकी धूर्तता भी जानते थे, इसलिए कोई भी तैयार न हुआ। उन नाविकों में से एक पहाड़ी था। उसने सोचा, ठण्डे देश में रहने वाला मैं क्यों न सेठ की शर्त मान लूं।"

यह सोचकर वह नदी में उतरकर कमर भर पानी में खड़ा हो गया। रात भर ठण्ड में बेचारा ठिठुरता रहा, दांत कटकटाता रहा, फिर भी हिम्मत करके खड़ा ही रहा। सवेरा होने पर ही बाहर निकला।

सेठ ने देखा कि कुछ दूर पर मछुआरे आग सेंक रहे थे। उसने पहाड़ी से कहा, "भाई, तुम हार गये। तुम पानी में खड़े जरुर थे, पर यह जो आग मछुवारों ने जाल रखी थी, इसकी गर्मी तुम्हें मिलती रही। तुम्हारा यह तीन महीने का वेतन कट गया।"

पहाड़ी बोला, "यह कैसा न्याय है! इतनी दूर नदी पार आग जल रही थी और मैं तो बीच घाट में खड़ा था।"

सेठ बोला, "नहीं-नहीं, आग तो आग है, उसमें गर्मी होती है और वह दूर-दूर तक जाती है।"

बेचारा पहाड़ी क्या करता! मन मारकर रह गया।

उसने अपना शरीर पोंछकर कपड़े पहने और बोला, "मैं मूर्ख साबित तो हो गया, परंतु मैं एक विद्या जानता हूं, जो आप लोग नहीं

जानते ।" सेठ ने जानना चाहा तो वह बोला, "मैं मुर्गी के चूज़े बड़ी अच्छी तरह इसी नाव पर भून सकता हूं ।" सेठ ने चार चूज़े मंगवाये और पहाड़ी के हवाले कर दिये । कहा, "भूनो, देखें, बिना आग के कैसे भूनोगे ?" अब पहाड़ी की बारी थी । वह बोला, "वह देखो, नदी पार लोग आग जलाकर सेंक रहे हैं ।" सेठ बोला, "मूर्ख, इतनी दूर की आग से ये चूज़े कैसे भुनेंगे ?" पहाड़ी बोला, "आप ही ने तो कहा था कि आग, आग है; गर्मी फेंकेगी ही । अगर वह आग मुझे ठण्ड से बचा सकती है तो इन चूज़ों को भी भून सकती है ।" पर सेठ हारने से हुज्जत करने लगा । तब पहाड़ी राजा के दरबार में गया और शिकायत की । राजा ने पहाड़ी के पक्ष में फैसला दिया । अब उसे दो और नावों का माल मिल गया ।

सेठ हार तो गया, पर उसने ठान ली कि कभी-न-कभी इस हार का बदला लिये बिना नहीं रहूंगा । कुछ दिन तो ठीक-ठीक चलता रहा । वेतन बराबर मिलता रहा । फिर सेठ की नीयत बदलती देखकर पहाड़ी भी कोई तरकीब सोचने लगा । अगला पड़ाव जब आया तो पहाड़ी शहर से दो छुरे खरीद लाया । एक को हाथ में रखता और दूसरा छुपाकर अपने पहनने के कपड़ों के अन्दर रखता । किसी को पता नहीं था कि उसके पास दो छुरे हैं ।

वह प्रतिदिन अपने एक छुरे की धार तेज करने लगा । साथियों को आश्चर्य हुआ कि वह ऐसा क्यों कर रहा है । पूछने पर बताया, "यह जादुई छुरा है । वह उसका साथ कभी नहीं छोड़ता और इससे बड़े-बड़े कार्य सिद्ध हो जाते हैं ।"

व्यापारी बोला, "छुरा कैसे साथ नहीं छोड़ता ? इसे नदी में फेंक दो तो तुम्हारा साथ छोड़ेगा ही ।" वह बोला, "नहीं, ऐसा हो ही नहीं

सकता। मैं आपको सिद्ध करके दिखा सकता हूं कि मेरे साथ ही रहेगा। आप चाहें तो शर्त लगा लें।"

व्यापारी तो इसी ताक में था। बोला, "ठीक है। तुम इसे नदी में फेंक दो। यदि यह तुम्हारे पास नहीं आया तो जो दो नावें मैंने तुम्हें दी थीं, वे मुझे वापस कर देना।" पहाड़ी बोला, "ठीक है। आपकी शर्त मैंने मानी। मेरी भी एक शर्त है। यदि मुझे यह छुरा मिल गया तो आप मुझे चार नावें देंगे।" व्यापारी ने यह शर्त मान ली। अब पहाड़ी की परीक्षा की बारी थी। उसने वह छुरा लिया और नाव के किनारे पर निशान बनाना आरम्भ कर दिया। कहा, "देखो, यहां से मैं इसे नदी में फेंकूगा। यहीं से यह मुझे मिलेगा।"

उसने चिन्ह के स्थान से छुआकर छुरा नदी में फेंक दिया। दो दिन के बाद दूसरा पड़ाव आया। व्यापारी बोला, "कहो! क्या तुम्हारा छुरा यहीं से मिलेगा?" पहाड़ी बोला, "क्यों नहीं। वह तो जादुई छुरा है। अवश्य मिलेगा।" और वह उसी चिन्ह के स्थान पर से नदी में कूद पड़ा। साथी बोले, "महामूर्ख है। दो दिन पहले हम यहां से चालीस मील पीछे थे। वहां छुरा गिराया था। आज यहां लेने उतरा है!"

पहाड़ी पानी के नीचे कुछ देर रहा, फिर उसका सिर दिखाई दिया और उसने जब अपना हाथ ऊपर किया तो उसके हाथ में छुरा था। सब हैरान हो गये। यह कैसे हुआ? सचमुच उसका छुरा जादुई था, जो नाव के साथ-साथ चालीस मील चला आया। व्यापारी को अपनी हार माननी पड़ी। उसे चार नावें पहाड़ी को देनी पड़ीं।

इस घटना से व्यापारी अपने नाविकों और नौकरों को ठगने की आदत से बाज़ आ गया, और ईमानदारी से उनके साथ व्यवहार करने लगा।

# नारियल का जन्म

सैकड़ों वष पहले की बात है। तीन दक्षिण भारतीय (जिनमें एक स्त्री थी) एक नाव में बैठकर बर्मा के तट पर आये। उन्हें पकड़कर राजा के पास हाजिर किया गया। पूछने पर उन्होंने स्वीकार किया कि उनके देश के राजा ने उन्हें देश-निकाला दे दिया और नाव में बैठाकर समुद्र में छोड़ दिया। उन्होंने बताया कि उन्हें अपराधी पाया गया था। इसीलिए उन्हें यह दण्ड दिया गया।

उनमें से एक तो चोर था, दूसरी डायन और तीसरा दुष्ट बातूनी था। राजा ने चोर को एक हजार रुपये दिये और बर्मा में बस जाने की आज्ञा दे दी। राजा बोला, "यह आदमी अपनी गरीबी के कारण चोरी करता था, परन्तु अब इसके पास कुछ पैसा हो गया है, और यह एक भले आदमी की तरह रहेगा।" डायन को भी एक सहस्त्र मुद्रा दीं और बर्मा में बस जाने की

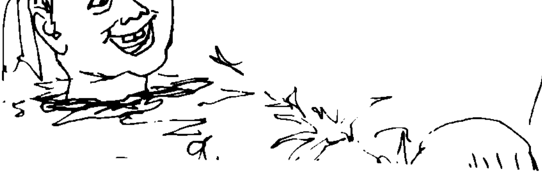

अनुमति दे दी। राजा बोला, "यह डायन केवल अपनी डाह के कारण लोगों को कष्ट देती थी। अब चूंकि वह धनी हो गई है, इसलिए किसी से ईर्षा-द्वेष नहीं करेगी और भली औरत की तरह रहेगी।" परन्तु राजा ने दुष्ट बातूनी को उसकी गपशप की आदत के कारण मृत्युदण्ड दे दिया। राजा ने कहा, "गपोड़ी हमेशा गपोड़ी होता है और इधर की उधर, उधर की इधर लगाकर झगड़ा करवाता है। इसे तो मौत के घाट उतारना ही उचित है।" गपोड़ी को जंगल में ले जाया गया और उसका सिर धड़ से अलग कर दिया गया।

दूसरे दिन एक राजकर्मचारी उस जंगल को किसी राज-कार्य से निकला। उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा, जब उसने देखा कि एक कटा हुआ सिर इधर-उधर डोल रहा है। उसे और भी अचम्भा हुआ जब उसका मुख खुला और बार-बार यही बात दोहराने लगा, "अपने राजा से कहो, यहां आकर मुझसे माफी मांगे, मेरे सामने झुके, नहीं तो मैं उसका सिर उड़ा दूंगा।" कर्मचारी डरकर दौड़ा-दौड़ा राज-दरबार में पहुंचा और यह घटना बताई। उसकी बात पर किसी को विश्वास नहीं हुआ। राजा ने सच्चाई का पता लगाने के लिए उसके साथ दूसरा अधिकारी भेजा। जब ये दोनों वहां पहुंचे तो देखा कि सिर चुपचाप पड़ा है, हिलता-डुलता भी नहीं है। राजा ने पहले कर्मचारी को झूठा कहा और उसको मृत्युदण्ड वहां दिया गया, जहां गपोड़ी का सिर धड़ से अलग किया गया था। जब उसका सिर कट गया तो गपोड़ी का सिर हंस पड़ा और बोला, "हा! हा! देखो, मैं मारा गया हूं, परन्तु फिर भी कुछ-न-कुछ उपद्रव कर ही सकता हूं। देखो न, उस कर्मचारी को मरवा डाला।"

यह अचम्भा देखकर दूसरे अधिकारी राजा के पास गये और राजा से सारी बात बताई। राजा को निरपराध मारे जाने वाले कर्मचारी की मौत पर बहुत अफसोस हुआ।

अब राजा ने सोचा, यह सिर जबतक पड़ा रहेगा, कोई-न-कोई खुराफात करता ही रहेगा। इसलिए राजा ने एक गहरा गड्ढा खुदवाया और कटे सिर को उसके भीतर गाड़ दिया।

दूसरे दिन वहां एक विचित्र पेड़ उग आया। उस पेड़ में लम्बा, सीधा, बिना शाखाओं वाला तना था, जिस पर बड़े-बड़े दल्लों जैसे निशान थे। सख्त धड़, बड़े-बड़े फटे हुए विचित्र प्रकार के पत्ते और ऊपर फल था। यह फल उस गपोड़ी आदमी के सिर जैसा था। यह वृक्ष ही 'नारियल' का वृक्ष है। पहले इसे 'गोंविन' कहते थे, अर्थात उपद्रवी वृक्ष। धीरे-धीरे 'गों' अक्षर उड़ गया। अब उसे ओं-विन कहते हैं, यानी नारियल का पेड़। आप नारियल को हाथों में लेकर अपने कान के पास ले जायं और हिलायें तो उसमें से गड़गड़ाहट की आवाज आयगी। यद्यपि अब वह फल हो गया है, फिर भी वह गपोड़ी है और इधर की उधर, उधर की इधर चलाता है और अपना उपद्रव बनाये हुए है।

# तीन हाथ की नाक

एक गांव में एक शराबी रहता था। वह सारा दिन शराब पीकर मस्त रहता था। उसी गांव में एक अफीमची भी था। उसका नाम था वैंशू। दोनों समाज से तिरस्कृत थे। दोनों के ही रहने का कोई ठौर-ठिकाना न था। कभी किसी धर्मशाला में तो कभी किसी मन्दिर के पीछे या फिर सराय में जाकर सो जाते। बस एक ही जगह थी जहां वे कभी नहीं जाते थे, और वह थी श्मशान भूमि। दोनों जानते थे कि वहां रात को भूतों का डेरा होता है।

एक दिन शराबी ने कुछ ज्यादा ही पी ली थी और वैंशू के मना करने पर भी श्मशान भूमि में चला गया। साथ में शराब की दो-चार हंडिया भी ले गया। वहां जाकर वह चबूतरे पर जा बैठा और बैठकर पीने लगा। ज्यादा नशा चढ़ जाने के कारण उसका डर भी जाता रहा, और वह कुछ अधिक ही चैतन्य हो गया। उसकी नींद भी गायब हो गई।

आधी रात में तीन भूत आये। शराबी ने पूछा, "क्यों भाई, तुम लोगों को आज देर कैसे हो गई? क्या मैं समय से पहले पहुंच गया हूं?"

थोड़ी देर में और भी भूत आ गये और चबूतरा भूतों से भर गया। एक भूत चारों ओर सूंघने लगा और बोला, "आदम-बू! आदमी की गन्ध आ रही है। यहां कोई बाहरी आदमी आया हुआ जान पड़ता है।"

दूसरा भूत बोला, "चलो, गिनें, कितने हैं।" शराबी तुरन्त खड़ा हो गया और गिनने लगा, "एक, दो, तीन, चार। अरे, सब ठीक है। बाहरी कोई नहीं है।"

भूतों को उसकी बात पर विश्वास हो गया और वे आपस में बातें करने लगे। एक बोला, "जानते हो! जहां पर मैं बैठा हूं, यहीं सोने से भरे सात घड़े गड़े हुए हैं।"

शराबी ने वह स्थान ध्यान में रखा। सवेरे जब सब भूत चले गये तो उसने धरती खोदकर सोने की सारी मुहरें निकाल लीं। अब तो वह धनी हो गया। उसने घर बनवा लिया और वैंशू के साथ मौज से रहने लगा। पर वैंशू को इससे सन्तोष नहीं हुआ। वह भी सोने के सात घड़ों की इच्छा करने लगा। उसने शराबी की खुशामद की और उन घड़ों का भेद जान लिया।

उसी रात वह श्मशान गया, लेकिन अफीम के नशे में सोता ही रह गया। आधी रात को सब भूत आये और पहले की तरह उन्हें आदमी की गन्ध आई। भूत कहने लगे, "आदम-बू! आदम-बू!" गिनती आरम्भ हुई और एक व्यक्ति ज्यादा निकला। वैंशू तो अफीम

के नशे में था। उसे कुछ पता ही नहीं चला। भूतों ने उसे पकड़ लिया। आपस में विचार-विमर्श करने के बाद तय किया कि उसे दण्ड दिया जाय। इसके बाद उन्होंने उसकी नाक खींच-खींच कर बहुत लम्बी यानी तीन हाथ की कर दी और सवेरा होते ही चले गये।

सवेरे शराबी अपने मित्र वैंशू को देखने गया तो उसे नशे में मस्त, सोया हुआ,,पाया। बड़ी कठिनाई से उसे उठाकर वह घर लाया। रास्ते में लोग वैंशू को देखते तो हंस-हंस कर बेहाल हो जाते। "अरे, इतनी लम्बी नाक !"

शराबी ने कहा, "दोस्त, मैं तेरी लम्बी नाक का इलाज करूंगा।"

वह रात को पहले की तरह ही देसी शराब की दो हंडिया लेकर श्मशान-भूमि के चबूतरे पर जम गया। आधी रात होने पर भूत आए और थोड़ी ही देर में "आदम-बू, आदम-बू" चिल्लाने लगे। शराबी तुरन्त खड़ा हो गया और उसने एक-एक करके गिनना आरम्भ किया, "एक, दो, तीन, चार—सब ठीक है। कोई बाहरी आदमी नहीं है।" इससे भूतों को भरोसा हो गया और वे अपनी बातों में लग गए।

शराबी बोला, "कल रात तुम लोगों ने उस आदमी को घेर रखा। मुझे तो उससे बात करने का मौका ही नहीं मिला। मैंने सोचा, शायद आज वह फिर आये तो मैं भी उसकी नाक खींचूं।"

भूत बोले, "वह नहीं आया। आ भी नहीं सकता। इतनी लम्बी नाक हो गई है उसकी। उसे अब रास्ता नहीं दीखेगा।"

शराबी ने कहा, "अरे, वह तो मर ही जायगा। कैसे खायगा, कैसे पिएगा ? क्या उसकी नाक छोटी नहीं हो सकती ?"

भूत बोले, "क्यों नहीं हो सकती। अगर वह इसका ठीक-ठीक इलाज करे तो।"

"अच्छा भाई, हमें बताओ, भला इसका क्या इलाज है?"

"सीधा-सा है। एक छोटी हथौड़ी प्रतिदिन दस बार नाक की नोक पर लगायी जाय। ऐसा दस दिन करने पर वह पहले जैसी हो जायगी। और हां, वह फिर कभी इस जगह न आए।"

शराबी ने बातों का रुख बदला और सवेरे सब भूतों के वापस चले जाने पर घर आ गया।

घर आकर वैसा ही किया। वैंशू की नाक छोटी हो गई और वह चैन से रहने लगा।

# कुटिल कमल किशोर

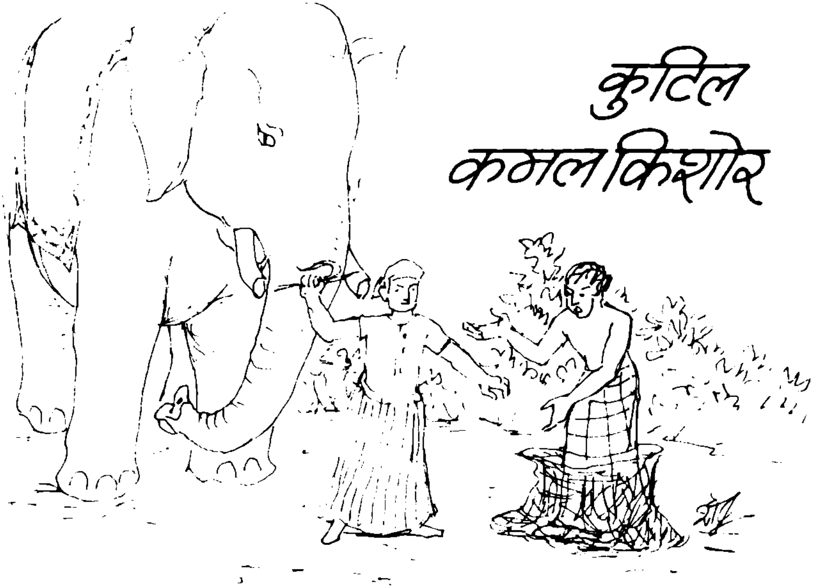

कमल किशोर बहुत चालाक और कुटिल स्वभाव का लड़का था। वह अपने साथियों को धोखा देकर उनसे खिलौने और मिठाई आदि ले लिया करता था। वह इतना ढीठ हो गया कि अपने माता-पिता को भी धोखा देने में नहीं चूकता था। एक दिन उसके पिता ने कहा, "बेटा, चलो, साथ के गांव चलें। रास्ते के लिए कुछ रोटी और अचार लिये चलते हैं।"

कमल कुछ दूर पिता के साथ चला, फिर धीरे-से कुछ पीछे होकर रोटी और अचार स्वंय ही खा गया। दोपहर को पिता विश्राम

करने एक धर्मशाला में ठहरे और कमल से कहा, "वह पोटली ला। कुछ खा लें।" बेटा बोला, "कौन-सी पोटली, पिताजी ? मैंने तो वह फेंक दी। आपने ही तो कहा था कि रास्ते के लिए ले चलते हैं। मैंने रास्ते को दे दी।" पिता को बहुत बुरा लगा और गुस्से में आकर उसे घर वापस भेज दिया।

कमल खुशी-खुशी घर आया। घर पहुंच कर रोनी शक्ल बनाकर मां से बोला, "मां-मां, पिताजी को रास्ते में सांप ने काट लिया। उनकी मृत्यु हो गई। गांव के कुछ लोग उनके शव को ला रहे हैं।" मां को बड़ा दुःख हुआ। कमल बोला, "मां ये जो लोग पिताजी का शव इतनी दूर से ला रहे हैं, उनको कुछ खाने को देना चाहिए। क्या कुछ खीर बन सकती है ?" खीर बनी। कमल ने आधी अकेले ही खा ली। इतने में उसका पिता सही सलामत घर आ गया। जब उसे इसकी धूर्तता का पता लगा तो मार-पीट कर उसे घर से निकाल दिया और फिर कभी घर में पैर रखने को भी मना कर दिया।

कमल घर से निकल पड़ा। रास्ते में एक गांव पड़ा। उसने एक आदमी को मिट्टी खोदते देखा। बोला, "चाचा, कुछ थके-थके से लगते हो। क्या कुछ खीर खाओगे ?" वह आदमी बहुत प्रसन्न हुआ। कमल ने कहा, "तुम सारी खीर ले लेना। मुझे एक छोटी-सी हंडिया दे दो। अपने लिए उसमें से थोड़ी ले लूंगा।" आदमी बोला, "मैं तो काम कर रहा हूं। तुम ही अन्दर जाकर काकी से मांग लो।"

कमल अन्दर गया और स्त्री से बोला, "मैंने कुछ खीर बाहर काका को दे दी है। उन्होंने कहा है कि मैं तुमसे पांच रुपये ले लूं।" काकी को उसकी बात पर विश्वास नहीं हुआ और वह उसकी ओर

देखने लगी। तबतक कमल चिल्लाया, "काका ! यह देखो न, काकी नहीं दे रही है।" आदमी ने समझा, उसकी स्त्री हंडिया नहीं दे रही है। बाहर से ही चिल्लाकर बोला, "अरे, दे दो। इसने मुझे काफी खीर दी है।" काकी बेचारी क्या करती ! कमल के हाथ पर पांच रुपये रख दिये। रुपये लेकर कमल पिछवाड़े से ही निकल गया। आगे चौराहे पर पहुंच कर उसने एक-एक कर चार रुपये सड़क के किनारे गाड़ दिये।

फिर हाथ में पेड़ की एक सूखी डाल ले ली और किसी मौके की ताक में खड़ा रहा। तभी एक घुड़सवार एक सुन्दर घोड़े पर चढ़कर उधर आया। कमल उसे देखकर अपनी लकड़ी से इधर-उधर कुछ ठोकने का बहाना करने लगा। घुड़सवार बोला, "क्या कर रहे हो ?" कमल बोला, "बात मत करो। मैं मन्त्र पढ़ रहा हूं। जहां-जहां यह लकड़ी मारूंगा वहीं से रुपया निकलेगा।" यह कहकर उसने एक-दो जगह लकड़ी से ठोका। खोदने पर घुड़सवार को रुपया मिला। घुड़सवार आश्चर्यचकित हुआ और बोला, "यह डंडा मुझे दे दो। मैं इसके बदले तुम्हें अपना घोड़ा दे दूंगा।" कमल ने कहा, "नहीं-नहीं ! यह कैसे हो सकता है ? इस डंडे से तो मैं हजारों रुपये बनाता हूं।" घुड़सवार उसके पीछे पड़ गया। आखिर कमल मान गया और उसके घोड़े पर बैठ कर रफूचक्कर हो गया।

अगले गांव पहुंचते-पहुंचते रात हो गई। उसे अस्तबल दिखाई दिया। वह अस्तबल के स्वामी के पास गया और कहा, "मैं एक व्यापारी हूं। रात हो गई है। मुझे और मेरे घोड़े को अस्तबल में रहने का प्रबंध कर दो।"

मालिक ने उसके ठहरने की व्यवस्था कर दी। कमल सवेरे उठा और घोड़े की लीद में कुछ रुपये छुपा दिये। फिर एक छलनी मंगाकर लीद को धोने बैठ गया। मालिक को यह देखकर हैरानी हुई कि सवेरे-सवेरे छलनी से क्या हो रहा है? उसने अपने नौकर से कहा, "देखो, वह छलनी से क्या करता है?" नौकर ने छिपकर देखा कि वह लीद को छलनी में धोता है, और कुछ चांदी के रुपये निकालकर रखता है।

नौकर ने मालिक को खबर दी। मालिक ने भी छिपकर देखा। उसका घोड़ा खरीदने की इच्छा हुई। कमल से कहा तो पहले तो वह नहीं माना, फिर एक हजार सोने की मोहर लेकर घोड़ा बेचने को राजी हो गया। इसलिए कि सेठ ने उसे रात भर अपने यहां रहने का प्रबंध किया था।

कमल एक हजार स्वर्ण मुद्राएं लेकर वहां से चल पड़ा। आगे बढ़ा तो देखा कि एक बूढ़ा-बुढ़िया आपस में बड़े प्रेम-विह्वल होकर बातें कर रहे हैं, ऐसे जैसे कि नव-विवाहित युवक और युवती करते हैं। कमल को शरारत सूझी। वह कुछ दूर आगे बढ़ा। पर्दा लगाकर एक घेरा बना लिया। एक छड़ी ले ली। एक बुढ़िया और उसकी जवान पुत्री को अपना सहायक बनाया और दोस्तों को समझा दिया कि जब वह बूढ़ा और बुढ़िया इस ओर आ पहुंचें तो क्या करना होगा! इतने में दोनों आते दिखाई दिये। बुढ़िया की बेटी को पर्दे के भीतर भेज दिया। बूढ़ा-बुढ़िया पहुंचे तो देखा कि एक लड़का बुढ़िया को अपनी छड़ी से सिर से पैर तक छू रहा है और कुछ मंत्र पढ़ता और फूंकता है। बूढ़ा हैरान हो गया कि क्या हो रहा है। उसने कमल से पूछा, "यह क्या कर रहे हो?" कमल बोला, "इस बुढ़िया

को युवती बना रहा हूं।" थोड़ी देर तक झाड़-फूंक करने के बाद उसने बुढ़िया को इशारा किया कि वह पर्दे के पीछे चली जाय और अपनी लड़की को बाहर भेज दे। लड़की की सूरत अपनी मां से मिलती थी। इसलिए जब वह बाहर आई तो बूढ़े ने समझा कि वही बुढ़िया जवान हो गई है। यह देखा तो बूढ़ा-बुढ़िया अचरज से भर गये। सचमुच बुढ़िया जवान हो गई थी। ये दोनों कमल की खुशामद करने लगे कि वह उनको भी युवा बना दे। कमल बोला, "मैं एक दिन में एक ही को जवान बना सकता हूं। आप लोग कल आइये।"

इन दोनों को जाने की जल्दी थी। कमल के पीछे पड़ गये कि किसी तरह उन्हें आज ही जवान बना दे। कमल राजी तो हुआ, पर उनसे एक हजार स्वर्ण मुद्राएं मांगीं। उन्होंने दे दीं। कमल ने पहले बूढ़े पति को छड़ी से छुआ, मन्त्र पढ़े। फिर उसे पर्दे के पीछे भेज दिया, और धीरज धरकर बैठने को कहा। बूढ़ा बेचारा चुपचाप बैठ गया। पर दो घंटे तक कुछ नहीं हुआ। तब वह अन्दर से चिल्लाकर बोला, "अरे जादूगर! मैं तो अभी तक बूढ़ा ही हूं। युवा नहीं हुआ।" कमल पर्दे के पीछे गया, बूढ़े को बेहोशी की दवा सुंघा दी और स्वयं बाहर आकर बुढ़िया को समझाया कि बूढ़े की हड्डी सख्त हो गई है। दो-चार घण्टे और लग जायंगे। मुझे जरुरी काम से दूसरे गांव जाना है। मैं तुम्हें कल युवती बना दूंगा। बुढ़िया रोने लगी। बोली, "नहीं-नहीं! यह नहीं होगा। बूढ़ा जवान हो जायगा तो तुरन्त किसी युवती को ले भागेगा। मुझे यहीं छोड़ जायगा। मुझे भी उसके साथ जवान बना दो, नहीं तो अनर्थ हो जायगा।"

कमल ने कहा, "अच्छा, तो ठीक है । तुम यहीं रुको । मैं बाजार से और पर्दे आदि खरीद लाऊं । बाजार दूर है । कुछ देर लग जायगी ।" बुढ़िया प्रसन्न हुई । कमल चलता बना ।

कमल के पास इस प्रकार धोखे से कमाया काफी पैसा हो गया । उसने अच्छा जीवन जीने का निश्चय किया । सोचा कि किसी अच्छे गांव में जाकर बस जाऊंगा । इधर राजा के पास उसकी धोखाधड़ी की बहुत शिकायतें पहुंच चुकी थीं । उसने अपने सिपाही कमल को पकड़ने के लिए भेज रखे थे । कमल पकड़ लिया गया और उसे एक बोरी में बांध करके नदी में फेंक देने का दण्ड सुनाया गया । कमल को बोरी में नदी किनारे लाया गया । शाम के समय उसे नदी में फेंकना था । अभी सूरज छिपने में देर थी । थैले के अन्दर बैठे-बैठे कमल को हाथी के आने की आवाज सुनाई दी । कमल चिल्लाकर बोलने लगा, "मुझे छोड़ दो । मैं राजा नहीं बनना चाहता । मुझे छोड़ दो ।" महावत ने उसकी चीख-पुकार सुनी, "तुम कौन हो ? क्या बात है ? क्यों चिल्ला रहे हो ?" कमल बोला, "राजा के सन्तान नहीं है । वह बूढ़ा हो चला है । मुझे पकड़कर जबरदस्ती युवराज बनाना चाहता है । मैं नहीं बनूंगा । ये सिपाही मुझे राजा के यहां ले जा रहे हैं । यहां छोड़कर शराब पीने गये हैं ।" महावत के मन में लालच हो गया । बोला, "दोस्त ! हम तुम स्थान बदल लें तो कैसा हो ? मैं थैले में आ जाऊंगा, तुम हाथी ले जाओ ।" कमल ने कहा, "सोच लो । राजा बनने का काम बहुत जिम्मेदारी का है । सारा राज-काज सम्भालना बहुत बड़ा सिरदर्द है ।"

महावत बोला, "कोई बात नहीं । मैं भी पढ़ा-लिखा युवक हूं । कर लूंगा ।" महावत ने हाथी से उतरकर उसकी बोरी को खोला ।

कमल बाहर आ गया और महावत बोरे के अन्दर चला गया। इसके बाद कमल हाथी पर सवार होकर चलता बना और महावत बैठा-बैठा राजकुमार बनने के स्वप्न संजोने लगा। बाद में उसका क्या हुआ, यह बताने की आवश्यकता नहीं है। कमल ने अब एक अच्छा नागरिक बनकर रहने का निश्चय किया और व्यापार करने लगा।

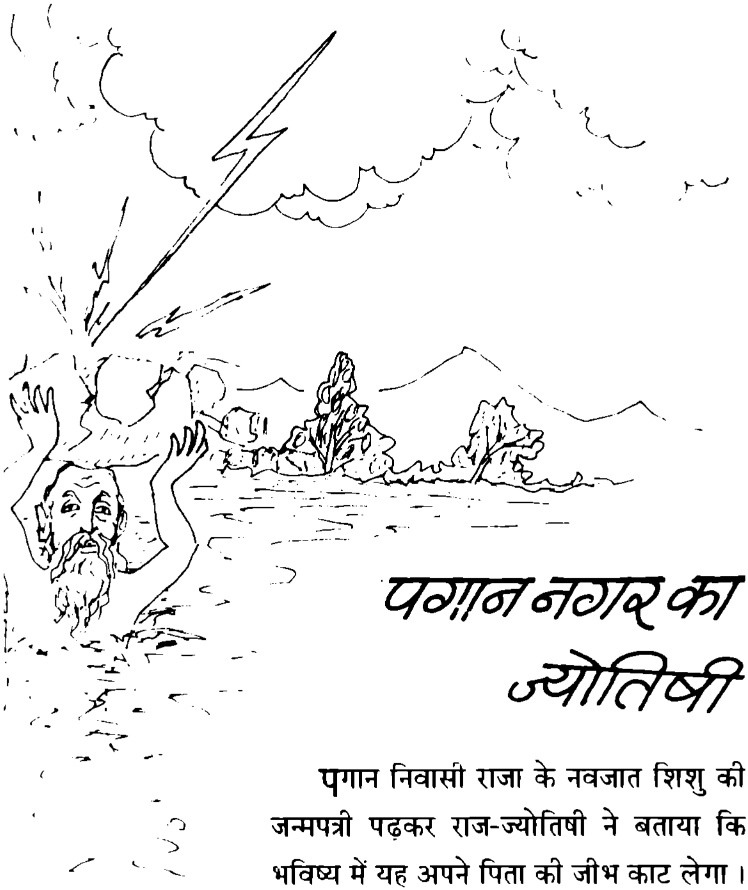

# पगान नगर का ज्योतिषी

पगान निवासी राजा के नवजात शिशु की जन्मपत्री पढ़कर राज-ज्योतिषी ने बताया कि भविष्य में यह अपने पिता की जीभ काट लेगा। इसलिए ज्योतिषी ने बालक को एक मिट्टी के घड़े में डालकर इरावदी नदी में बहा दिया। उसने सोचा, यह घड़ा बहते-बहते समुद्र में कहीं खो जायगा। परन्तु जब वह घड़ा बहता हुआ बर्मा के दक्षिणी भाग में पहुंचा तो वहां एक वृद्ध स्त्री नदी के किनारे नहा रही थी। उसने घड़े को देखा और पकड़ लिया। बाहर लाकर देखा, उस घड़े में एक छोटा-सा बच्चा है। वह उसे अपने घर ले गई

और अपने पुत्र की तरह उसका लालन-पालन करने लगी। जब बालक बड़ा हुआ तो वह कुछ व्यापारियों के साथ विदेश के किसी नगर में गया। वहां एक विद्यालय था। उसमें उसने सोलह वर्ष तक ज्योतिष विद्या सीखी। फिर पढ़ाई छोड़कर घर आ गया। तब उसे पता लगा कि उसकी मां, जिसने उसे पाला-पोसा था, मर चुकी है। उसे बड़ा दुःख हुआ। वह पगान नगर चला गया। वहां उसने भविष्यवक्ता का काम आरम्भ किया। भाग्य बताने के कार्य में वह इतना प्रसिद्ध हुआ कि सब उसे 'ज्योतिष-शास्त्र का गुरु' कह कर पुकारने लगे। राजज्योतिषी तक इसी नाम से बुलाने लगे। उसका इतना नाम होने पर राजज्योतिषी, जो वास्तव में उसका पिता था, उससे ईर्ष्या करने लगा।

एक दिन पगान के राजा के मन में साधु आश्रम बनाने की इच्छा हुई। उसने ज्योतिषी से कहा, "कोई ऐसी जगह बताओ, जहां उसकी नींव रखी जा सके।" ज्योतिषी ने अपनी पोथियों में देखकर कहा, "हालांकि गर्मी के दिन हैं, फिर भी दोपहर को बादल घिरेंगे, वर्षा होगी और एक चील एक मरी मछली को जिस स्थान पर गिरायगी, वही जगह ठीक होगी।" राजज्योतिषी ने भी हिसाब लगाया और कहा, "मछली यहां नहीं, वहां गिरेगी।" दोनों ज्योतिषियों में विवाद हो गया। उन्होंने एक-दूसरे को ललकारा। फिर निश्चय हुआ कि जिसकी बात झूठी हो, उसकी जीभ काट ली जाय । उस छोटे ज्योतिषी की बात सही रही। असल में मछली गिरी तो राजज्योतिषी के बताये स्थान पर; लेकिन वह मरी नहीं थी। गिरी तो उलटती-पलटती छटपटायी फिर वह मरी छोटे ज्योतिषी की बताई जगह पहुंचकर। यही जगह नींव के लिए चुनी गई। राजज्योतिषी ने

अपनी पुस्तक के पन्ने पलट कर देखा तो उसे पता लगा कि वह उसी का लड़का है, जो उसकी जीभ काटेगा। उसे बहुत शर्म आई और मन-ही-मन कहा, 'यह तो मुझसे भी बढ़-चढ़कर निकला।'

उसी नगर में एक और प्रसिद्ध साधु-ज्योतिषी भी था। वह छोटे ज्योतिषी से बड़ी ही ईर्ष्या करता था। उसने निश्चय किया था कि उस छोटे ज्योतिषी को हरा कर दम लूंगा। उसने उसे अपनी जन्मपत्री देखने के लिए कहा। ज्योतिषी ने कहा, "आज से सातवें दिन सूरज निकलेगा और तुम्हारे सिर पर बिजली गिरेगी।"

बेचारे साधु को अपनी जान की चिन्ता हुई। वह सातवें दिन मिट्टी का एक बड़ा-सा ढेला सिर पर रख नदी के पानी में गले तक डूबकर जा खड़ा हो गया। बिजली गिरी और उस मिट्टी के ढेले के सात टुकड़े हो गये, पर साधु को चोट नहीं आई। साधु ने लौटकर उस छोटे ज्योतिषी से कहा, "युवा ज्योतिषी, कहां गई तुम्हारी ज्योतिष विद्या! सूरज निकला, चमकती बिजली गिरी, पर मेरा सिर तो वैसा ही है। कुछ भी तो हुआ नहीं, मुझे।"

छोटे ज्योतिषी को शंका हुई कि सचमुच ज्योतिष झूठ है। उसने ज्योतिष-विद्या-शास्त्र को इकट्ठाकर इन्हें जला दिया। इतने में एक सेवक दौड़ा-दौड़ा आया और छोटे ज्योतिषी से कहने लगा, "पुस्तकें जलाओ नहीं, अपने पिता को दे दो।"

"अब तो देर हो गई। मैं तो सब जला चुका हूं।" "तो उसकी राख ही मुझे दे दो।" वह राख लेने गया तो मुर्गे ने राख को भी बिखेर दिया था।

छोटे ज्योतिषी को अपनी असफलता पर इतना क्षोभ हुआ था कि वह पागल-सा हो गया। वह पगान में इधर-उधर पागलों की तरह घूमने लगा। पर वह एक विचित्र ज्योतिषी था, जो केवल भविष्य की ही नहीं, बल्कि जमीन में कहां सोना गड़ा है, कहां चांदी का हंडा दबा पड़ा है, आदि खोज करनेवालों को इनका पता बता देता था। खोज करनेवाले इसका पता लगाकर सोना-चांदी निकाल लेते थे। गुप्त स्थानों की भी खोजकर पता बता देता था कि खजाना कहां है।

छोटा ज्योतिषी अपने कार्य में बहुत ही कुशल था। वह 'डिंग डौंग', 'डिंग डौंग' करके घड़ियाल बजाता जाता था। लोग उसके पीछे-पीछे चलते थे। कुछ महीनों बाद छोटा ज्योतिषी बीमार हो गया। उसे विचार आया कि मैंने अपने पिता की जीभ काटी थी, इसीलिए मैं पागल हो गया हूं। पर उस समय मुझे पता नहीं था कि यह मेरा पिता है। उसने भविष्यवाणी की कि मेरे मरने के बाद मेरी टांगें टूट जायंगी। उसके बाद जब वह मरा और उसके लिए पेटी लाई गई तो वह बहुत छोटी थी। उसकी टांगें टूटी हुई थीं। मरने के बाद उसकी बातें सच हुईं। ऐसा था पगान का वह ज्योतिषी!

# चन्द्र-ग्रहण

एक गांव में एक गरीब विधवा बुढ़िया रहती थी। उसके दो नाती थे। वह जब मरने लगी तो नातियों को बुलाकर बोली, "मैं गरीब थी, और गरीब हूं। तुम्हें सोना, चांदी, रुपया कुछ भी नहीं दे सकती हूं। रसोईघर में एक कुण्डी और एक सोटा है। वही तुम लोग ले लो। एक भाई कुण्डी ले लो और दूसरा सोटा।" इतना कहकर वह मर गई।

बड़ा भाई बोला, "यह कुण्डी लेकर मैं क्या करूंगा? मैं कोई रसोइया थोड़े ही हूं।" वह घर छोड़कर चला गया और पास के शहर में अपनी मेहनत की कमाई से अच्छी तरह रहने लगा।

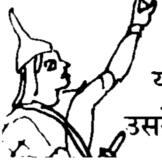

छोटे भाई को नानी में पूरी आस्था थी। उसने सोचा, "नानी यह जो थाती हमारे लिए छोड़ी है, इसमें कुछ रहस्य है।" उसने सोटा अपने पास रखा। पड़ोसी उसकी मूर्खता पर हंसी

उड़ाने लगे। वह बेचारा जंगल से सूखी लकड़ी लाकर गांव में बेचता और अपनी गुजर-बसर करने लगा।

एक दिन जंगल में वह लकड़ी चुन रहा था तो वहां एक बड़ा-सा सांप निकला। डर के मारे लड़का पेड़ पर चढ़ गया; पर सांप बोला, "डरो मत ! मैं तुम्हें कोई हानि नहीं पहुंचाऊंगा। मुझे यह सोटा कुछ देर के लिए दे दो।"

लड़के ने पूछा, "क्या करोगे इसका ?" सांप बोला, "मेरी पत्नी मर गई है। यह सोटा उसकी नाक के पास रखूंगा तो वह जी उठेगी।"

लड़का बोला, "मुझे तो नहीं पता कि यह जादुई सोटा है।"

सांप उसे अपने साथ ले गया। वह सोटा सर्पिणी की नाक पर जैसे ही रखा, वह जी उठी। सांप ने कहा, "इसका गुण इसकी गन्ध में है, और इसका प्रभाव तबतक रहेगा जबतक यह भेद तुम और किसी को न बताओगे।" यह कहकर सांप चला गया।

लड़का वापस गांव को चला। रास्ते में एक मरा कुत्ता दिखाई दिया। उसने वह सोटा सुंघाया तो वह जी उठा और लड़के के पीछे हो लिया। अब तो लड़का एक नामी वैद्यराज हो गया, जोकि मुर्दों को भी जिला सकता था। इसी बीच राजा की इकलौती बेटी मर गई। राजा ने इस वैद्य को बुला भेजा। सोटा सुंघाते ही लड़की जी गई। राजा ने उसका ब्याह उससे कर दिया और युवराज घोषित कर दिया। परन्तु फिर भी यह युवराज वैद्य अपनी वैद्यगिरी भी चलाता रहा। राज्य में कोई शोक और सन्ताप नहीं रह गया। पूरे राज्य में खुशी-ही-खुशी थी। एक दिन इस युवराज वैद्य को विचार आया—

जब यह सोटा मृत्यु को जीत सकता है तो बुढ़ापे को भी हर सकता होगा।' ऐसा सोचकर उसने वह सोटा अपनी और अपनी रानी के सामने रखा। रानी ने समझा कि उसका पति सनकी वैद्य है, इसीलिए लकड़ी सुंघाता है। पर कुछ दिनों बाद उसे पता लगा कि वे दोनों बूढ़े हो ही नहीं रहे हैं, और उसे जवान बने रहने की दवा मिल गई है।

अब तो चन्द्र देवता को ईर्ष्या हुई कि मृत्युलोक के दो व्यक्ति कैसे चिर युवा हो गये। सूरज भी बूढ़ा हो जाता है। हर शाम को बूढ़ा होकर वह कुरुप-सा लगता है। चन्द्रमा ने वैद्य से वह सोटा चुराने की ठानी।

एक दिन संयोग से वह सोटा भीग गया। बाद में उस पर काई जम गई। वैद्यराज ने उसे धूप में सुखाने को रख दिया और उसकी रखवाली करने पास ही बैठ गया। रानी ने कहा, "क्यों इस मामूली-सी लकड़ी के लिए धूप में बैठे चौकसी करते हो ? क्यों नहीं कुछ सिपाहियों को बैठा देते ?"

वैद्य बोला, "नहीं, मुझे किसी पर विश्वास नहीं है। मेरा कुत्ता रखवाली करेगा।" कुत्ता बैठ गया। जब चांद सोटा चुराने को उतरा तब दिन था। इसलिए कुत्ते को चांद दिखाई न दिया, पर उसे गन्ध आ गई। चन्द्रमा ने सोटा उठाया और भाग चला। कुत्ते को सोटे की गन्ध की पहचान थी। वह भी उसी गन्ध के सहारे चन्द्रमा के पीछे दौड़ा।

तब से कुत्ता चन्द्रमा का पीछा कर रहा है। सोटे की गन्ध से वह भी अमर हो गया है। रात को वह चांद को देखकर गाता है, पर दिन में सोटे की गन्ध से ही वह चांद का पीछा करता है। कभी-कभी कुत्ते

के मुंह में चांद का एक किनारा आ भी जाता है, पर क्योंकि चन्द्रमा बहुत बड़ा है, कुत्ते के मुंह में सारा चांद नहीं आता और वह चांद को उगल देता है। इस प्रकार यह चक्र चलता ही रहता है, और चलता ही रहेगा। हम तब कहते हैं, चांद को ग्रस लिया और चांद छुप गया।

# विद्वान न्यायाधीश

एक राजा था। बड़ा धर्मात्मा और विद्वान था। विद्वानों का बड़ा आदर करता था। अपने देश के विद्वानों को आदर से अपने यहां बुलाता और पुरस्कार देता था। अपने अनुभव से उसे लगा कि बुद्धिमान और विद्वान लोग केवल धनी परिवारों में ही पैदा होते हैं।

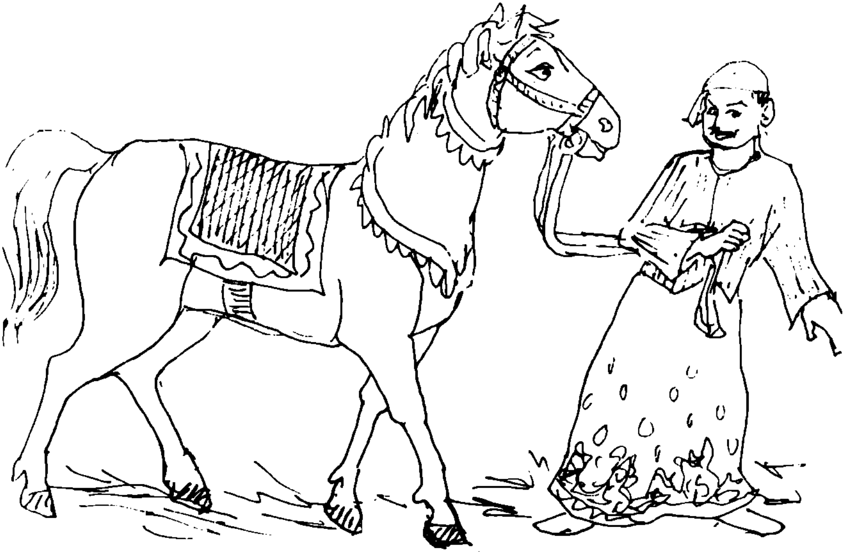

किसी ने कहा कि ऐसा नहीं है। साधारण स्थिति का व्यक्ति भी बुद्धिमान हो सकता है, और होता है। राजा ने इस बात की जांच करने की ठानी। इसी दौरान किसी ने बताया कि अमुक ग्राम में एक गरीब व्यक्ति रहता है, जो बहुत बुद्धिमान है और बड़ी चतुराई से न्याय करता है।

राजा उसी गांव की ओर लश्कर के साथ रवाना हुआ। उसे रास्ते में एक भिखारी मिला। वह राजा से पैसे मांगने लगा। राजा ने पैसे दिये, फिर भी वह भिखारी उसके पीछे रहा।

राजा ने खीजकर कहा, "भले आदमी, मैंने पैसे दे दिये हैं। अब क्यों मेरे पीछे पड़ा है ? छोड़, मुझे आगे जाना है।"

भिखारी बोला, "देखिये, मेरी टांग में चोट लगी हुई है। मैं चल नहीं पा रहा हूं। आप भी उसी ओर जा रहे हैं। घोड़े पर अपने पीछे मुझे बैठा लीजिये। आपका बहुत उपकार मानूंगा। आपका घोड़ा तगड़ा है। मैं दुबला-पतला हूं। उसे कोई हैरानी नहीं होगी। मैं बाजार तक जाकर उतर जाऊंगा।"

राजा को दया आ गई। उसने भिखारी को पीछे घोड़े पर बैठा लिया।

बाजार पहुंचने पर राजा ने उससे कहा, "लो भाई, बाजार आ गया। अब तुम उतर जाओ।"

भिखारी ने डांटकर कहा, "क्या कहा, मैं उतर जाऊं। नहीं, मुझे नहीं, तुम्हें घोड़े पर से उतरना है। यह घोड़ा मेरा है। नहीं उतरोगे तो न्यायाधीश के पास जाकर शिकायत करूंगा।"

राजा बड़ा हैरान हुआ। बोला, "यह कैसे पता लगेगा कि घोड़ा किसका है ?"

भिखारी बोला, "यह कौन-सी बड़ी बात है ! घोड़ा कमजोर आदमी के लिए होता है। आपके जैसे तगड़े आदमी तो पैदल भी जा सकते हैं, और जाते हैं। वे घोड़ा क्यों रखें ?"

राजा ने विचार किया, "चलो, इसी बहाने गांव के न्यायाधीश की भी परीक्षा हो जायगी।" राजा मान गया। वे लोग गांव के न्यायाधीश के यहां गये। वहां जाकर राजा ने देखा कि साधारण झोंपड़ी के सामने एक चौकी पर एक अधेड़ आदमी बैठा हुआ है। उसके सामने जमीन पर ही कुछ लोग बैठे हैं। कोई मुकद्दमा चल रहा है। राजा भी भीड़ में बैठ गया। उसने साधारण आदमी जैसे कपड़े पहने थे, इसलिए किसी को यह पता न चला कि यह कोई बड़ा आदमी है।

एक व्यक्ति शिकायत कर रहा था, "मैं इस तेली से तेल खरीदने गया और अपनी थैली खोलकर इसे पैसे देने लगा तो इसके मन में लोभ समाया। इसने मेरे पैसे ही छीन लिये। देखिये, इसी छीना-झपटी में मेरे हाथ में चोट आ गई है।" न्यायाधीश ने तेली से पूछा, "तुम्हें क्या कहना है ? क्या सब सच है, जो यह कहता है ?"

तेली बोला, "नहीं, असल बात यह है कि यह मुझसे पैसे भंजाने को कहने लगा। मैंने पैसे देने के लिए अपनी थैली नीचे रखी तो यह उसे ले भागा। मैंने पीछा कर इसे पकड़ लिया और अपने पैसे छीन लिये।"

न्यायाधीश ने कहा, "अच्छा, थैली मेरे पास छोड़ जाओ। कल फैसला होगा।"

फिर दूसरा मुकद्दमा पेश हुआ। जमींदार आये। न्यायाधीश ने प्रश्न किया, "जमींदारजी, क्या सेवा कर सकता हूं?"

जमींदार बोला, "देखो, यह युवक मेरा नौकर है। निरा बुद्धू है। यह मेरे यहां काफी दिनों से है, पर कुछ भी सीखा नहीं है। अब मेरे पड़ोसी ने इसे सिखा-पढ़ाकर अपने घर बुला लिया।"

पड़ोसी का कहना था कि यह लड़का दूसरे देश से मेरे पास विद्या पढ़ने आया है। पिछले महीने से मेरे पास है। क्योंकि यह गरीब है और पढ़ाई के बदले कुछ पैसे नहीं दे सकता, इसलिए मेरी सेवा कर रहा है। इसकी जमींदार से कोई देनदारी नहीं है।"

न्यायाधीश ने कहा, "अच्छा, इस लड़के को यहीं मेरे पास छोड़ देना। जमींदारजी, आप शाम को आइये, इस मामले के और गवाहों की जरूरत नहीं है।"

अब राजा के झगड़े की बारी आई। राजा ने कहा, "इसने पहले पैसे मांगे, फिर घोड़े की सवारी और अब यह कहता है कि घोड़ा इसका है।"

भिखारी ने तमक कर कहा, "वाह, यह नवजवान है और मैं बूढ़ा, कोई भिखारी नहीं हूं। यह मोटा आदमी मेरे घोड़े पर चढ़ा और अब इसे हथियाना चाहता है। क्या कभी इतने तगड़े आदमी को घोड़े की जरूरत होती है?"

न्यायाधीश ने कहा, "ठीक है। घोड़ा यहीं मेरे पास छोड़ जाइये और शाम को आइये।"

शाम को सब लोग उस झोंपड़ी के सामने इकट्ठे हो गये। ग्रामीण न्यायाधीश ने अपने फैसले सुनाने आरम्भ किये।

मुकद्दमा नं० १:—पैसे तेली के हैं, ग्राहक के नहीं। क्या किसी को कुछ कहना है ? कोई सन्देह हो तो बोलें। गांव का मुखिया दोषी को अवश्य दण्ड देगा।" बिना कुछ बोले वह ग्राहक चला गया।

मुकद्दमा नं० २:— "लड़का जमींदार का नौकर नहीं है। वह तो अध्यापक का शिष्य है।"

जमींदार बिगड़ गया। बोला, "ओ, भोले जज ! वह लड़का मेरा नौकर है। उसकी बातें न मानो। मुझे नौकर दिलादो तो एक हजार रुपये इनाम दूंगा।" न्यायाधीश बोले, "इस मामले में और कुछ कहने-सुनने को नहीं है। अगर मेरे फैसले पर विश्वास न हो तो राजा के न्यायालय में जाओ। आपको अवश्य दण्ड मिलेगा। लोभ को छोड़ो और अन्यायी न बनो। गुरुजी, अपने चेले को साथ लेते जाइये।"

जमींदार वहां से सिर झुकाकर चला गया।

मुकद्दमा नं० ३— "बूढ़े दादा, आप भी आइये। जरा मेरे साथ पिछवाड़े चलें।" कुछ घोड़े खड़े थे, उनकी ओर इशारा करके कहा, "आप अपने घोड़े को पकड़ लाइये।"

बूढ़ा गया, पर खींचने पर भी घोड़ा न आया। अब राजा की बारी आई। राजा गया, घोड़े को पुचकारा और घोड़ा तुरंत उसके साथ हो लिया।

न्यायाधीश ने कहा, "बाबा, आप जाओ और इस प्रकार धूर्तता न करो।"

यह सब हो जाने पर भी राजा वहीं खड़ा रहा। न्यायाधीश ने पूछा, "क्यों, फैसला ठीक हो गया है ? आप अपने घोड़े को लेकर जाइये।"

राजा बोला, "मैं इस प्रदेश का राजा हूं। आपकी योग्यता पर प्रसन्न हूं। पर मैं जानना चाहता हूं कि इन निर्णयों पर आप कैसे पहुंचे ?"

वह बोला, "यह मामूली बात है। मैंने सब पैसे पानी में डाल दिये। तेल ऊपर तैरने लगा। इससे पता लगा कि थैली तेली की थी। नौकर लड़का पढ़ना जानता था, इससे ज्ञात हो गया कि वह गुरु का ही शिष्य है। जमींदार ने अपने आप मान लिया कि वह अनपढ़-गंवार है।

"और आपका मामला तो सीधा-सादा था। घोड़ा खींचने पर भी उसके साथ न गया और आपके पास चुपचाप चला आया। घोड़ा अपने मालिक को पहचानता है।"

राजा बहुत खुश हुआ और मान गया कि साधारण लोग भी बुद्धिमान हो सकते हैं। राजा ने उस न्यायाधीश को अपने राज्य का मुख्य न्यायाधीश नियुक्त कर दिया।

# चार शेखचिल्ली

एक नगर में चार युवक रहते थे। वे अपने आपको बहुत चतुर मानते थे। बड़ी-बड़ी गप्प मारकर लोगों को ठगते थे। एक दिन चारों ने देखा कि धर्मशाला में एक धनी यात्री आकर टिका है। उन्होंने उसे ठगने की ठानी। चारों उसके पास गये। इधर-उधर की मीठी-मीठी बातों में उससे मालूम कर लिया कि वह अमुक शहर से आया है, और कुछ माल खरीदकर जायगा।

युवकों ने उससे कहा, "महोदय, आप तो अनेक देशों में घूमे हैं। हमें उन देशों की कोई ऐसी घटना सुनाओ, जो बहुत अजीब लगे और उस पर विश्वास न किया जा सके। हम भी सुनायंगे, शर्त यह

रहेगी कि जो किसी की बात को झूठी बताकर अविश्वास प्रकट करेगा, वह हार जायगा और जीतने वाले का दास बनकर रहेगा ।"

धनी सेठ भी चालाक था । इनकी शर्त मान गया । कहा, "चलो, अपनी घटना सुनाओ । नगर के न्यायाधीश को बुलाकर उसके सामने ही बातचीत होगी ।" युवकों ने कहा, "ठीक है ।"

पहले युवक ने अपनी वार्त्ता सुनाई । उसने कहा, "जब मैं पैदा भी नहीं हुआ था । माता के गर्भ में ही था कि मेरी मां ने बेर खाने की इच्छा प्रकट की । बेर का पेड़ घर के सामने ही था, पर था ऊंचा । मेरे पिताजी ने कहा कि इतना ऊंचा तो वह चढ़ नहीं सकते । मेरे बड़े भाइयों ने भी इन्कार कर दिया । मुझे यह बरदाश्त नहीं हुआ ।

"मेरी प्यारी मां बेर खाने को तरसती रह जाय, यह कैसे हो सकता है ? मैं धीरे से गर्भ से निकला और पेड़ पर चढ़ गया । कुछ बेर तोड़ कर अपनी जेब में भरे और नीचे उतर आया । उन बेरों को एक गीले कपड़े में लपेटकर भोजनालय में रख दिया । सवेरे लोगों ने देखा कि वहां तो बेर-ही-बेर हैं । मां ने भी भरपेट खाये, घरवालों ने भी खाये और पड़ोसियों में भी बांटे । फिर भी इतने सारे बच गये कि घर के बाहर दरवाजे के सामने ऊंचा ढेर लग गया, इतना ऊंचा कि हमारा घर भी उसके पीछे छिप गया । क्या किसी ने ऐसी घटना देखी या सुनी है ?"

सेठ बोला, "हां, ऐसा हो सकता है । आप ठीक कहते हैं ।"

अब दूसरे की बारी आई । उसने कहना शुरू किया, "जब मैं सिर्फ एक सप्ताह का था तो घर के बाहर सैर को निकला । इमली का एक बड़ा-सा पेड़ दीख पड़ा । मुझे भूख लगी थी । मैं पेड़ पर चढ़

गया। भरपेट इमली खाई। इतनी खाई कि मुझे नींद-सी आने लगी और शरीर इतना भारी हो गया कि नीचे भी उतरना मुश्किल था। किसी तरह एक सीढ़ी लाकर मैं नीचे उतरा।"

इतना कहकर उसने सोचा, सेठ कहेगा कि ऐसी गप्प कौन मानेगा। परन्तु सेठ ने कहा, "वाह-वाह। कितनी बहादुरी की बात है कि सात दिन का बच्चा इतना भारी काम कर सकता है।" शेष तीनों ने भी कहा कि हम भी मानते है।

अब तीसरे युवक ने अपनी कहानी सुनाई। उसने कहा, "मैं जंगल में घूमने निकला। मुझे एक सुन्दर खरगोश दिखाई दिया। मैं उसे पकड़ने के लिए उसके पीछे भागा। वह छलांग लगाकर एक झाड़ी में घुस गया। मैं भी उसी झाड़ी में घुसा। दोनों के सामने एक बाघ मुंह बाये खड़ा है। मैंने उससे कहा, "आप कहां? मैं तो खरगोश को खोज रहा हूं।" बाघ गुर्राया और मुझ पर झपटा। पर मैं डरा नहीं और कूदकर उसका मुंह पकड़ लिया। बायें हाथ से नीचे के जबड़े को पकड़कर जोर लगाया तो बाघ के दो टुकड़े हो गये और वह वहीं मर गया।

इतना कहने के बाद उसने सबकी ओर देखा कि क्या प्रतिक्रिया होती है। सेठ बोला, "शाबाश! तुम तो बड़े बहादुर और साहसी हो। मैं तुम्हारी बात का विश्वास करता हूं।"

जब तीन साथी हार गये तो चौथे ने अपनी कहानी सुनाई, "पिछले साल मैं एक किश्ती लेकर मछली पकड़ने एक बड़ी झील में गया। सारा दिन बीत गया, पर एक भी मछली जाल में न फंसी। मैंने देखा, दूसरे मछुओं को भी कोई मछली न मिली। सब हैरान थे कि

क्या कारण हो सकता है ! मैंने कहा, मैं झील में नीचे जाकर पता करता हूं ।

"मैं झील में कूद गया । नीचे चलता ही गया । तीन दिन तक चलने पर झील के तल पर पहुंचा । वहां जाकर देखता हूं कि एक विशालकाय मच्छ बैठा हुआ मछलियों को खा रहा है । अब मैं समझा कि इसीलिए एक भी मछली ऊपर आ नहीं पाती थी । मुझे क्रोध आया । मैंने कसकर एक घूंसा उसके सिर पर मारा । मच्छ तुरंत मर गया ।

"मैं तीन दिन भूखा था तो उसी मच्छ को खाने का निश्चय किया । मैंने झील के तल पर ही आग जलाई । उस मच्छ को भूना और उसे और सारी मछलियों को खा गया । ऊपर आया तो मुझे कुछ भी थकान का अनुभव नहीं हो रहा था ।"

उसने सोचा, अब तो वह यात्री सेठ अवश्य ही कहेगा कि यह सब निरा झूठ है ।

चारों युवकों के अपनी-अपनी कहानी सुना देने पर उस यात्री ने बहुत गंभीर होकर कहना शुरू किया, "पास के ही गांव में रुई का खेत था । उसमें एक अजीब पौधा था । वह काफी बड़ा था । उसका रंग भी लाल था । उसमें न कोई शाखा थी, न पत्ते । कुछ समय बाद उसमें चार शाखाएं फूटीं । प्रत्येक में एक-एक सुन्दर लाल रंग का फल लगा । मैंने फल तोड़े, उन्हें काटा । प्रत्येक फल में से एक युवक निकला, क्योंकि मेरे खेत में उगे पेड़ के फल थे, ये युवक भी मेरे ही हुए । मैंने इन्हें अपने खेत में काम पर लगा दिया । पर थे चारों बड़े सुस्त और आलसी । ठीक-ठीक काम नहीं करते थे । एक दिन मैंने चारों को खूब डांटा । बस, रातों-रात वे चारों भाग निकले । उनकी

तलाश में घूमता रहा। आज मैंने देखा तो तुम चारों ही वे युवक हो। अब चुपचाप चारों जने चलकर मेरे खेत में काम करो, नहीं तो यह मुखिया सामने बैठा है। तुम्हें दण्ड देगा। जो मैं कहता हूं वह ठीक है कि गलत ?"

चारों क्या जवाब देते ! उनका मुंह लटक गया। यदि ठीक कहते हैं तो उसके दास बनते हैं और अगर कहते हैं कि उसकी बात पर विश्वास नहीं करते तो वैसे हार जाते हैं और उस यात्री के दास बनते हैं। अपनी शर्त के अनुसार वे चुपचाप बैठकर सोचने लगे कि क्या करें ?

न्यायाधीश मुखिया ने उनसे तीन बार कहा कि कुछ जवाब दो, पर वे क्या जवाब देते ? अपनी हार मान गये।

यात्री ने कहा, "अब तुम लोग मेरे दास हो। परन्तु मैं तुम लोगों को दासता से मुक्त करता हूं। ये जो कपड़े तुम लोगों ने पहन रखे हैं, वे भी मेरे हैं। इन्हें उतार कर यहीं रख दो और इस गांव को छोड़कर चले जाओ।"

बेचारों ने उसकी बात मान ली।

# चन्द्रलोक का बूढ़ा

किसी गांव में एक निर्धन बूढ़ा रहता था। वह दूसरों के धान कूट-कूट कर अपना गुजारा करता था। उसका कोई मित्र और साथी नहीं था। बस एक बूढ़ा खरगोश उसके साथ था। बूढ़ा दिन भर और रात को जब तक चांदनी रहती, धान कूटता रहता और खरगोश उनके पास बैठा रहता। जो भूसी निकलती, उसे खा लेता। एक चांदनी रात को बूढ़ा बड़बड़ाया, "यह भी क्या मुसीबत है ! अकेले धान कूटो और छानो। अगर मेरे साथ कोई बुढ़िया होती तो वह कम-से-कम छानने में तो सहायता दे देती।"

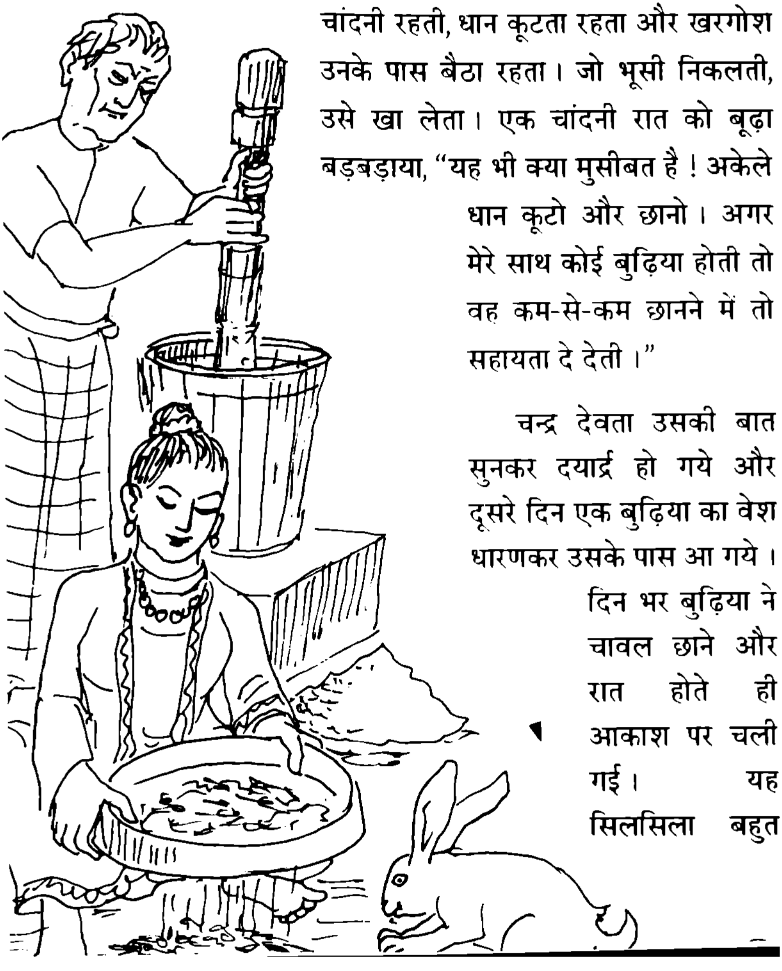

चन्द्र देवता उसकी बात सुनकर दयार्द्र हो गये और दूसरे दिन एक बुढ़िया का वेश धारणकर उसके पास आ गये। दिन भर बुढ़िया ने चावल छाने और रात होते ही आकाश पर चली गई। यह सिलसिला बहुत

समय तक चलता रहा । बुढ़िया दिन में आती, अपना काम पूरा करती और चली जाती । कभी-कभी चांदनी रात को भी आती और बूढ़े की सहायता करती । अंधेरी रात को वह नहीं आती, क्योंकि बूढ़ा अंधेरे में काम नहीं करता था ।

बूढ़ा हैरान था कि वह हर रोज रात को कहां चली जाती है । एक दिन इसने उससे पूछा, "तुम कौन हो ? और रात होते ही कहां चली जाती हो ?"

बुढ़िया ने बताया, "मैं चन्द्रलोक की देवी हूं ।"

बूढ़े ने उससे प्रार्थना की, "तब मुझे और मेरे खरगोश को भी चन्द्रलोक में ले चलो । तुम्हारे बिना हमें सूना-सूना-सा लगता है ।" चन्द्रदेवी दोनों को साथ ले गई, और वे उसके साथ ही चन्द्रमा पर रहने लगे ।

आप लोग पूर्ण चांद को ध्यान से देखें तो अभी भी उस पर बूढ़ा बैठा चावल कूट रहा है और उसका खरगोश पास ही बैठा भूसी खा रहा है ।

# महामूर्ख

एक गांव में चार युवक रहते थे। वह थे महामूर्ख। इस कारण उन्हें कोई काम पर नहीं रखता था। अन्त में वे चारों एक बुढ़िया के यहां गये और उसके आगे अपना रोना रोते हुए माई से कहा, "दयाकर हमें कोई काम दे दो।"

बुढ़िया को दया आ गई। इसने उनसे कहा कि कुछ सरकण्डे लाकर उसकी झोंपड़ी की छत ठीक कर दें। चारों गये और जंगल से एक-एक बोझ सरकण्डों का ले आये। पहले मूर्ख ने माई से पूछा, "इन्हें कहां रख दूं?" बुढ़िया ने कहा, "चौके के पीछे।" शेष तीनों

मूर्खों ने भी बारी-बारी से आकर पूछा, "माई, इसे कहां रख दें ?" माई ने सभी को यही उत्तर दिया, "चौके के पीछे रख दो ।"

वे चारों फिर जंगल में गये और सरकण्डे ले आये । आकर फिर पूछा, "कहां रखें ?" बुढ़िया ने वही उत्तर दिया ।

वे चारों फिर जंगल गये और चार बंडल सरकण्डे ले आये । उन्होंने बुढ़िया से पूछा, "कहां रखें ?" इस बार बुढ़िया खीज गई और चिढ़ कर बोली, "मूर्खो, रख दो मेरे सिर पर ।" चारों ने अपने-अपने बोझ माई के सिर पर रख दिये । बेचारी बुढ़िया मर गई ।

पड़ोसियों को इन मूर्खों की करतूत का पता चला तो उन्हें पकड़कर मारा-पीटा और कहा, "अब जाओ, बुढ़िया के क्रिया-कर्म के लिए जंगल से लकड़ी काट लाओ ।"

चारों चले । एक बड़ा पेड़ दिखाई दिया । एक ने कहा, "यही पेड़ ठीक है । इसे काट डालें ।"

दूसरा बोला, "ठीक है । मैं इस पर चढ़ जाता हूं, और अपने बोझ से इसे गिरा दूंगा ।"

तीसरा और चौथा बोला, "ठीक, हम नीचे खड़े रहेंगे और गिरते पेड़ को कन्धों पर ही टेक लेंगे, नहीं तो गिरे पेड़ को फिर से उठाना पड़ेगा ।"

पहला ऊपर चढ़ा और उसने पेड़ को गिराया । वे दोनों, जो नीचे खड़े थे, दबकर वहीं मर गये । गिरा तो ऊपर वाला भी, पर उसके ज्यादा चोट नहीं आई । वह कुछ बेसुध-सा हो गया । अब वह पहला

मूर्ख, जिसने पेड़ को काटा था, सोचने लगा— 'ये मेरे साथी मर गये हैं या सोये पड़े हैं ?' वहीं बैठकर वह उनकी प्रतीक्षा करने लगा।

थोड़ी देर में वह, जो बेसुध पड़ा था, उठ बैठा।

पहले ने उससे पूछा, "क्या तुम जाग गये हो ?"

उसने उत्तर दिया, "हां, मैं तो जाग गया हूं। पर ये दोनों अब भी सो रहे हैं।" अब ये दोनों बैठकर राह देखने लगे।

दो-तीन दिन बीत गये। तब एक लकड़हारा उधर से गुजरा। उसने देखा कि दो जने तो मरे पड़े हैं और दो उसके पास चुपचाप बैठे हैं। उसने पूछा, "क्यों, क्या बात है ? यहां क्या कर रहे हो ?"

वे दोनों बोले, "हम अपने इन दो मित्रों के जाग उठने की प्रतीक्षा कर रहे हैं। ये दोनों इतने आलसी हैं कि सोते ही रहते हैं।"

लकड़हारा इतना उत्तर सुनकर हैरान रह गया। उसने पूछा, "क्या तुम नहीं जानते कि ये दोनों मरे पड़े हैं?"

वे बोले, "हैं ! क्या ये मर गये ?" तुम्हें कैसे पता कि ये मर गये ?"

वह बोला, "अरे मूर्खो, तुम्हें क्या इनके शरीर से बदबू नहीं आ रही है ? तुम्हारे नाक नहीं है क्या ?"

यह कहकर लकड़हारा चला गया। ये दोनों उठकर सड़क पर इधर-उधर घूमने-फिरने लगे।

दो-तीन दिनों से दोनों ने कुछ खाया नहीं था। अचानक एक को डकार आई और मुंह से बदबू भी। साथी ने कहा, "देखो, वह

बुद्धिमान लकड़हारा हमें बता गया कि बदबू से मरा आदमी पहचाना जाता है ।"

वह बोला, "उसने ठीक तो कहा था। मैं मर गया हूं ।" इतना कहकर वह सड़क के बीचोंबीच लेट गया।

इतने में एक फीलवान अपना हाथी लेकर उस ओर आ निकला। उसने देखा कि दो जने सड़क पर लेटे हुए हैं। उसने उन्हें डांटा, "उठो, रास्ता छोड़ो। मेरे हाथी को आगे जाना है ।"

वे दोनों बोले, "हम कैसे उठकर रास्ता दें ? हम दोनों तो मरे हुए हैं ।"

फीलवान बोला, "ठहरो, मैं तुम दोनों को अभी जिन्दा कर दूंगा ।" इतना कहकर वह हाथी पर से उतरा और अपने अंकुश को दोनों की टांगों में दो बार घुमाया।

दोनों चट से उठ खड़े हुए और कहने लगे, "तुम्हारा यह अंकुश तो चमत्कारी है। मरे को भी जिला देता है। यह हमें दे दो और बदले में हमारा कुल्हाड़ा ले जाओ ।"

फीलवान ने अपना अंकुश देकर कुल्हाड़ा बदले में ले लिया। कुल्हाड़े का मूल्य तो उसके अंकुश से कहीं ज्यादा था। अब ये दोनों मूर्ख उठे और नगर की ओर चल दिये।

चलते-चलते एक धनी सेठ के घर पहुंचे। उस सेठ की पुत्री मर गई थी। जब सेठ से बोले, "सेटजी, चिन्ता न करो। हम अभी तुम्हारी पुत्री को जीवित कर देंगे। हम वैद्य हैं ।"

शोक-मग्न पिता इस पर बहुत प्रसन्न हुआ। यदि लड़की बच जाय तो उसने उन्हें सोने और जवाहरात से निहालकर देने का वचन दिया। उन दोनों ने घर के लोगों को वहां से हट जाने के लिए कहा, और लगे उस कन्या के मृत शरीर को अंकुश से छेदने।

पर वह जीवित नहीं हुई। सेठ ने बेटी के शरीर की ऐसी दुर्दशा देखी तो रोष में आकर अपने नौकरों से इन दोनों की कसकर मरम्मत करने को कहा। जब उनकी खूब खबर ली गई तो सेठ ने कहा, "तुम दोनों अजनबी हो। तुम्हारी हमारे परिवार से क्या दुश्मनी थी, जो मेरी मरी हुई पुत्री को भी इतनी बुरी तरह कष्ट दिया।"

दोनों हाथ जोड़कर बोले, "सेठजी, हम तो केवल आपको प्रसन्न कर रहे थे कि कुछ खाने को मिल जाता। हम तीन दिन से भूखे हैं।"

सेठ को पता लग गया कि दोनों निपट मूर्ख हैं। बोले, "अब जाओ। जो हो गया सो हो गया। तुम लोग मेरी पुत्री की मृत्यु पर शोक मनाओ और कहो, 'बहन, तुम क्यों हमें छोड़कर चली गईं'।"

वे दोनों वहां से चले। आगे गये। वहीं एक घर में विवाह सम्पन्न हो रहा था। उन्होंने उसके पास देखा कि विदाई की बेला में कन्या रो रही है। वे उसके पास जाकर सांत्वना देते हुए बोले, "हे बहन, क्यों रो रही हो ? क्यों हमें छोड़कर जा रही हैं। हम भी तुम्हारे विछोह पर शोक मना रहे हैं।"

घरवालों को यह सुनकर बड़ा बुरा लगा, और वहां भी इन दोनों की खूब पिटाई हुई।

वे बोले, "भइया, हम तो आप लोगों को खुश करना चाहते थे। हमें असल में भूख लगी है। कुछ खाने को दे दीजिये।"

कन्या के भाई बोले, "मूर्खो, यह मातम का अवसर नहीं है, खुशी का मौका है। तुम लोग नाचो-गाओ और खुशियां मनाओ।"

वहां कुछ खा-पीकर वे दोनों आगे चले तो एक ऐसे घर में पहुंचे, जहां पति-पत्नी झगड़ रहे थे और एक-दूसरे को मार रहे थे। ये दोनों जने वहां पहुंचे और लगे उनके चारों ओर शोर मचाने, "हम बहुत प्रसन्न हैं, हम बहुत खुश हैं।"

पति-पत्नी ने आपस में लड़ना छोड़कर इन दोनों की खूब मरम्मत की। दोनों बड़ी दीनता से बोले, "हमें तो कुछ खाने को दो। हम आप लोगों को प्रसन्न करना चाहते थे।"

उस दम्पत्ति को मालूम हो गया कि वे दोनों मूर्ख हैं, और उन्हें समझाया, ऐसे कहो, "आप लोग झगड़ो मत, शान्त हो जाओ। आप दोनों पति-पत्नी एक ही गाड़ी के दो पहिये हैं।"

दोनों मूर्ख अब आगे चले। देखा, दो भैंसे आपस में टकरा रहे हैं, एक-दूसरे को लहू-लुहान कर रहे हैं। ये भैंसों के बीच घुस गये और बोले, "क्रोध को शान्त करो। आखिर तुम दोनों पति-पत्नी हो। एक ही गाड़ी के दो पहिये हो।"

भैंसे क्या समझें कि क्या कहा जा रहा है! वे तो भिड़ रहे थे। ये दोनों उनके बीच आ गये और उनकी मार से मर गये। इस प्रकार उन चारों मूर्खों का अंत हो गया।

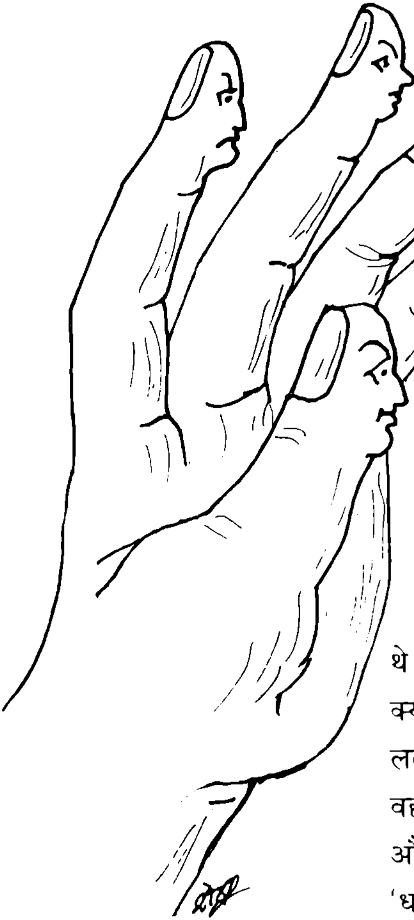

# वे पांच

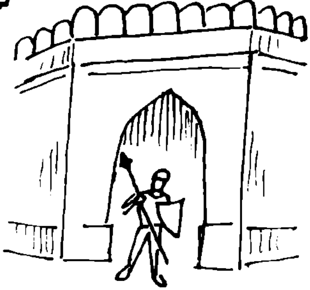

एक बार एक जगह चार भाई रहते थे। पहले भाई का नाम था, 'झगड़ू', क्योंकि वह हमेशा सबको लड़ने के लिए ललकारता था। दूसरा था 'लम्बू', क्योंकि वह सब से लम्बा था। तीसरा समझदार और किफायतदार था। उसका नाम था 'धनी'। छोटा सबसे दुबला-पतला, सदा पीछे रहनेवाला था। उसका नाम 'छोटू' था। उनका एक कर्मचारी था, परन्तु नौकर-वौकर नहीं था; वह सबसे बलशाली और सबसे

अनुभवी था। वह अपने साथियों का नेता और सलाहकार था। कर्मचारी का नाम था 'टेंगू', क्योंकि वह नाटा और मोटा था।

चारों भाई और टेंगू देश-विदेश घूमने निकले। खूब घूमे और जहां गये, वहीं उन्होंने कमाया। अन्त में वे एक बड़े नगर में आये। यहां का राजा बहुत शक्तिशाली था। टेंगू ने कहा, "हम छोटे-छोटे देशों में नाम कमाते रहे हैं; अब इस बड़े राज्य को जीतें और अपना नाम करें, तब तो कुछ बात हुई। फिर तो हमारा नाम इतिहास में अमर हो जायगा।" सब मान गये।

वे राजमहल के फाटक पर गये और झगडू ने राजा को युद्ध के लिए ललकारा। युद्ध छिड़ गया। एक ओर राजा के सिपाही और दूसरी ओर थे पांच भाई। इस युद्ध में लम्बू ने बड़े करतब दिखाये। बेचारा राजा अन्त में मारा गया।

पांचों में अब विवाद चला कि उनमें से कौन राजा बने? चारों भाइयों ने कहा, "टेंगू को राजा बनना चाहिए, क्योंकि वह हमारा सलाहकार था।" परन्तु उसने साफ इनकार कर दिया। वह बोला, "झगडू ने युद्ध का आह्वान किया था। उसी के कहने पर यह युद्ध हुआ और हम जीते। उसको ही राजा बनना चाहिए।" झगडू बोला, "यह कैसे हो सकता है? लम्बू की युद्ध-कुशलता के कारण हम जीते। उसको राजा बनना चाहिए।" लम्बू नकार गया। उसका कहना था, "भाई, राजकाज के झंझट में मैं नहीं पड़ना चाहता। रुपये पैसे आदि की बातें मेरी समझ के बाहर हैं। धनी को ही राजा बनाया जाय। यह सब हिसाब-किताब, आय-व्यय ठीक-ठाक रख सकता है।" धनी बोला, "देखो, हम सब तो और बहुत कुछ कर सकते हैं, पर यह बेचारा छोटू अकेला कुछ नहीं कर सकता। वह सब

से सीधा और कमजोर है। ईमानदार भी है, इसे ही राजा बना देंगे तो सब लोग अमन-चैन से रह सकेंगे।" पर छोटू बोला, "भाइयो, मैं राजा बनने के योग्य नहीं हूं। इतना छोटा हूं। मेरी बात कौन मानेगा? यह काम मुझसे नहीं होगा।"

बहुत देर तक आपस में वाद-विवाद होता रहा। अन्त में फैसला हुआ कि सब मिलजुल कर राज करेंगे।

मेरे दोस्तो! अपने हाथों को देखो। तुम सबके पास भी ये पांचों हैं। ठेंगू—अगूठा है, सबसे मोटा और बलवान। उसके पास की पहली अंगुली तर्जनी है। यह झगड़ा करने, किसी को डांटने, आदि में सबसे पहले निकलती है और इसी के द्वारा किसी वस्तु की ओर इशारा भी किया जाता है। बीच की अंगुली तो सबसे लम्बी है ही, यह कहने की बात नहीं। उसके पास वाला धनी है, क्योंकि अंगूठी, आदि उसी में पहनी जाती है। सबसे पिछली छोटी ही है। नम्र और सरल स्वभाव की। ये पांचों तुम्हारे साथ सदा रहते हैं और हरेक काम में तुम्हारी सहायता करते हैं। मेल से हमेशा विजय होती है और कार्य में सफलता मिलती है।

# डड्डोरानी

एक आदमी था। उसकी स्त्री थी। पर कोई संतान नहीं थी। इस कारण वे बहुत उदास रहते थे। एक दिन उन्हें जब पता चला कि उनको संतान प्राप्त होने-वाली है तो वे बहुत प्रसन्न हुए। परन्तु उन्हें उस समय बड़ी निराशा हुई, जब पत्नी ने सन्तान के रूप में एक छोटी-सी मेढकी को जन्म दिया। उन्हें केवल संतोष

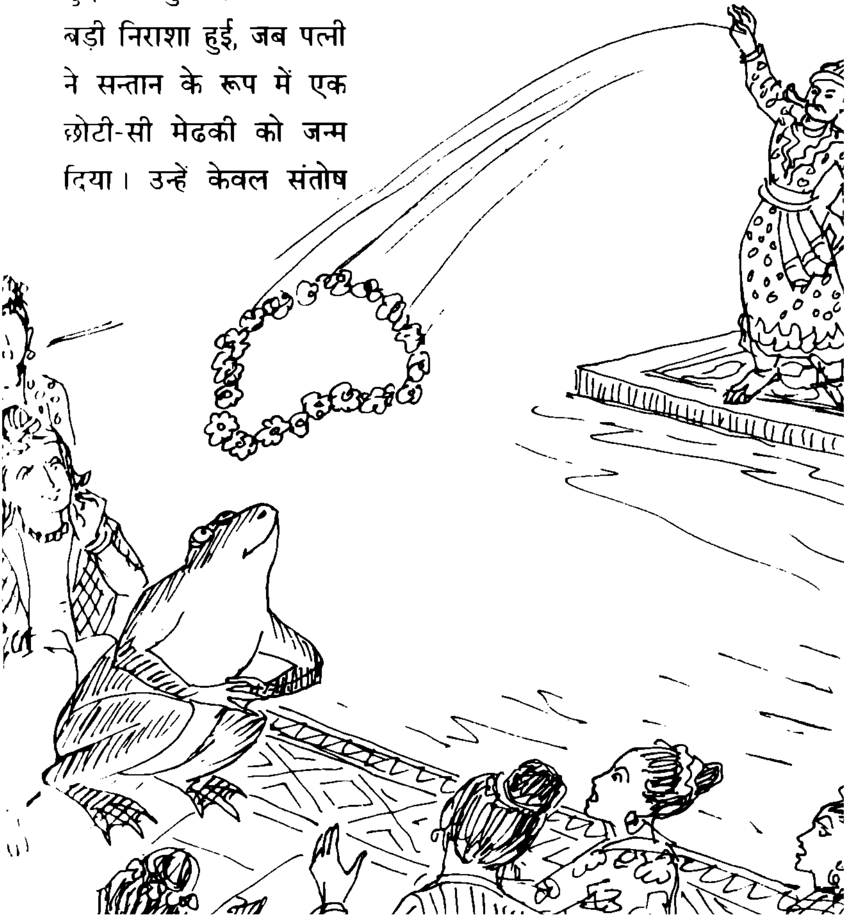

इसी बात का था कि वह आदमी के बच्चे की तरह खेलती और बोलती थी। धीरे-धीरे पड़ोसी भी उसे चाहने लगे। उन्होंने प्यार से उसका नाम 'डड्डोरानी' रख दिया।

कुछ वर्षों के बाद डड्डोरानी की मां चल बसी। उसके पिता ने दूसरा ब्याह कर लिया। नई मां एक विधवा थी और उसकी दो बेटियां थीं। वे बेटियां बहुत ही कुरूप थीं। वे डड्डोरानी को देखकर जलती थीं, क्योंकि उसे पड़ोसी बहुत प्यार करते थे।

इसी बीच उस देश के राजकुमार ने शहर में डुगडुगी पिटवाकर घोषणा की कि आगामी पूर्णमासी के दिन वह अपने सिर के बाल धोएगा और उसके बाद अपनी वधू चुनेगा। इसलिए विवाह की इच्छुक सभी नवयुवतियों को समारोह में सम्मिलित होने के लिए आमंत्रित किया गया।

निश्चित तिथि को डड्डोरानी की दोनों कुरूप बहनें खूब सज-धजकर उत्सव में शामिल होने चलीं। उन्हें आशा थी कि राजकुमार उनको अवश्य पसन्द कर लेगा। बेचारी डड्डोरानी भी उनके पीछे-पीछे दौड़ी और बोली, "दीदी! मुझे भी अपने साथ ले चलो।" वे दोनों चिढ़कर बोलीं, "अरे, वहां लड़कियों को बुलाया है, मेढकियों को नहीं। तू जाकर क्या करेगी?" फिर भी वह उनके पीछे-पीछे चलती रही।

राजमहल का विशाल द्वार आया और दोनों बहनें अन्दर चली गईं। डड्डोरानी बाहर ही खड़ी रह गई। द्वारपालों की खुशामद करने के बाद ही उन्होंने उसे अन्दर जाने दिया। अन्दर उसने देखा कि वहां सैकड़ों सुन्दर लड़कियां एक कमल के तालाब के चारों ओर बैठी

थे। वह भी उन्हीं में जा बैठी। सभी राजकुमार के आने की प्रतीक्षा कर रहे थे।

राजकुमार आया। उसने कमलोंवाले तालाब में अपना सिर धोया। लड़कियों ने भी अपने बाल धोये और उत्सव में शामिल हुई। उत्सव के बाद राजकुमार बोला, "देखो, तुम सब बहुत सुन्दर हो। मैं किसे चुनूं? फैसला नहीं कर पा रहा हूं। मेरे हाथ में यह फूलों की माला है। मैं इसे ऊपर फेकूंगा। जिसके सिर पर यह गिरेगी, वही मेरी वधू होगी।"

उसने माला को फेंका। सब लड़कियां उत्सुकता से देखने लगीं कि वह कहां गिरती है। किस्मत का खेल देखिये, माला डड्डो के सिर पर जा गिरी। सभी युवतियां बड़ी खिन्न हुईं और डड्डो की बहनें तो और भी ज्यादा जल-भुन गईं। राजकुमार भी निराश हुआ, पर उसने अपना वचन निभाया। इस प्रकार मेढकी डड्डो युवराज्ञी बन गई।

कुछ वर्षों के बाद राजा ने अपने चारों पुत्रों को बुलाया। कहा, "मैं बूढ़ा हो गया हूं। अब राजपाट तुम लोग संभालो। मैं जंगल में वानप्रस्थी बनकर रहूंगा। मेरा उत्तराधिकारी तुम में से कौन होगा, इसका निर्णय मैं तुम्हारी परीक्षा लेकर करूंगा। मैं तुम सबको एक जैसा ही समझता हूं। इसलिए एक ही शर्त है। तुममें से जो भी सात दिनों के अन्दर मुझे एक सुनहरा हिरन लाकर देगा वही मेरा उत्तराधिकारी होगा।"

छोटा राजकुमार घर गया और डड्डोरानी को पिताजी की शर्त बताई। वह बोली, "बस, एक सुनहरा हिरन! आप तनिक भी चिंता न करें। सातवें दिन आपको सुनहरा हिरन मिल जायगा।"

राजकुमार ने उसकी बात मान ली और निश्चिंत हो गया। उसके तीनों बड़े भाई जंगलों में हिरन की खोज में निकल गये। सातवें दिन पौ फटने के पहले ही डड्डो ने राजकुमार को जगाया और कहा, "लो ! यह रहा तुम्हारा सुनहरा हिरन। जाओ और पिताजी के हवाले कर आओ।"

राजकुमार हैरानी से अपनी आखों को मल-मलकर देखता रहा। सचमुच सोने का जीता-जागता हिरन उसके हाथ में था। दूसरे सब भाई खाली हाथ घर लौटे थे। राजा ने छोटे राजकुमार को अपना उत्तराधिकारी घोषित कर दिया। बड़े भाइयों ने पिता की बड़ी खुशामद की और अपनी योग्यता दिखाने का एक और अवसर मांगा।

राजा ने न चाहते हुए भी उनकी बात मान ली और नई शर्त बताते हुए कहा, "आज से सातवें दिन, सूर्योदय से पहले, मुझे ऐसा चावल लाकर दो, जो कभी पुराना न हो, और ऐसी मछली लाओ, जो सदा ताजी रहे।"

छोटा राजकुमार घबराया, पर जब उसने यह शर्त डड्डोरानी को बताई तो वह बोली, "चिन्ता क्यों करते हैं ? जाइये, आराम से अपना काम कीजिये। आपको वैसे चावल और मछली ठीक समय पर मिल जायंगे।"

पहले की तरह तीनों बड़े भाई चावल और मछली की खोज में निकल पड़े। सातवें दिन पौ फटने के पहले डड्डो ने पति को जगाया और बोली, "लीजिये, यह रहे चावल और यही रही मछली। जाकर महाराज को दे दो।"

तीनों बड़े भाई हताश हो गये । वे तो बहुत बढ़िया चावल और उमदा मछली लाये थे । राजा ने फिर छोटे राजकुमार को ही राजा बनाने की बात कही । तीनों बड़े भाई फिर राजा से प्रार्थना करने लगे, "बस, आखिरी मौका और दे दीजिये ।" राज मान गया और बोला, "यह सचमुच अन्तिम अवसर है । आज से सातवें दिन, सुबह होने से पहले, संसार की सबसे सुन्दर स्त्री को यहां ले आओ ।"

तीनों बड़े भाई बड़े प्रसन्न हुए। सोचने लगे, "हमारी रानियां बहुत सुन्दर हैं । हम उन्हें ही पिता के सामने पेश कर देंगे । हम जरूर जीतेंगे और यह छुटका कहीं का नहीं रहेगा ।"

छोटे ने यह बात सुनी । वह घर गया । डड्डोरानी से बोला, "रानी, अब तो मुश्किल हो गई। मुझे बाहर जाकर खोज करनी होगी, क्योंकि तुम्हारी तीनों जेठानियां बहुत सुन्दर हैं। पर मैं उनसे भी सुन्दर स्त्री ढूंढ़ लाऊंगा ।" डड्डो बोली, "क्यों घबराते हैं ? पहले की तरह ही निश्चिंत रहिये। मैं स्वयं ही सबसे सुन्दर स्त्री कहलाऊंगी ।"

राजकुमार ने उसे आश्चर्य से देखा । फिर धीरे से बोला, "अच्छा, तो मैं तुम्हें ही राजा के सामने पेश करूंगा । पर मुझे डर है कि कहीं इस बार मैं हार न जाऊं ।"

सातवें दिन सुबह डड्डो ने कहा, "मुझे अब सुन्दर बनना है । आप बाहर बैठिये; और जब जाने का समय होगा, मुझे बुला लीजियेगा ।"

थोड़ी देर बाद राजकुमार ने कहा, "डड्डो, चलने का समय हो गया है ।" डड्डो की आवाज आई, "कुछ और रुको, मैं अपने मुख पर

चन्दन का लेप कर रही हूं।" थोड़ी देर बाद राजकुमार फिर बोला, "राजकुमारी, हमें अब तो चलना ही चाहिए, बहुत देर हो रही है।"

"अच्छा, राजकुमार, चलिये।" डड्डो ने कहा। राजकुमार ने सोचा था, जैसे डड्डो ने हिरन, मछली और चावल प्राप्त कर लिये थे, वैसे ही वह सुन्दर भी बन जायगी। पर यहां तो वही मेढकी डड्डो थी। फिर भी वह उसे राजमहल में ले गया। तीनों भाभियां पहले से ही वहां बैठी थीं। राजा ने छोटे राजकुमार से कहा, "तुम्हारी सुन्दरी कहां है?"

डड्डो बोली, "महाराज, मैं ही इनकी सुन्दरी हूं।" इतना कहकर उसने अपना मेढकी का चर्म उतार दिया । सभी लोग यह देखकर चकित रह गए कि सामने अत्यंत सुन्दर रेशमी वस्त्रों से सुसज्जित सुन्दरी खड़ी है। राजा ने उसे ही सर्वसुन्दरी घोषित किया। राजकुमार ने उसे फिर मेढक का बाना नहीं पहनने दिया। डड्डो ने भी वह बाना तुरन्त जला दिया। दोनों खुशी-खुशी रहने लगे। अब वे राजा और रानी बन गये थे।

# न्यायमूर्ति शशा

धूर्त्तराज और भोंदूमल एक-दूसरे के पड़ोस में रहते थे। धूर्त्तराज के पास एक गाय थी और भोंदूमल के पास एक घोड़ी। एक रात धूर्त्तराज की गाय के बछिया पैदा हुई और भोंदूमल की घोड़ी ने एक बछेड़ी पैदा की। अन्धेरा तो था, पर धूर्त्तराज ने बछिया की 'में में' और घोड़ी की हिनहिनाहट सुनी तो उसके मन में पाप समा गया। वह धीरे-से उठा और भोंदूमल के यहां से बछेड़ी को ले आया और अपनी बछिया उसके यहां छोड़ आया। फिर अपने घर जाकर सो रहा।

प्रातःकाल उठकर अड़ोस-पड़ोस में जाकर सबसे कहने लगा, "अरे, जरा देखो तो ! कितने आश्चर्य की बात है मेरी गाय ने एक बछेड़ी को जन्म दिया।" सबलोग आकर बछेड़ी को देख-देखकर हैरान होते। तबतक भोंदूमल आ गया और बोला, "तो मेरे यहां बछिया कैसे आई ?" धूर्त्त बोला, "यह तो और भी अचरज-भरा कुदरत का खेल है। अरे ! भगवान की लीला है ! वह राई से पर्वत और पर्वत से राई कर देता है। यह तो उसके लिए मामूली बात है।" परन्तु भोंदूमल का सन्देह नहीं मिटा। उसने सोचा, हो-न-हो धूर्त्त ने मेरी बछेड़ी चुरायी है। उसने गांववालों से बीच-बचाव करने को कहा, पर वे धूर्त्त से डरते थे। उन्होंने बीच-बचाव करने से इन्कार कर दिया। तब भोंदू ने कहा, "चलो, दूसरे गांव से किसी को लाकर न्याय कराएं।" धूर्त्त मान गया। वे दोनों चले; उन्हें एक खरगोश मिला, जिसका नाम 'शशा' था। वह इनका फैसला करने को तैयार हो गया। उसने दोनों की बातें ध्यान से सुनीं और उनसे कहा, "दोनों अपने-अपने घर जायं। आज से सातवें दिन वह प्रातःकाल उनके गांव आकर फैसला देगा।" दोनों अपने गांव लौट आये।

सातवें दिन सवेरे से ही प्रतीक्षा की गई, पर खरगोश नहीं आया। जब सांझ हो गई तो वह आया। उसकी सब इज्जत करते थे। इसलिए किसी ने देर से आने का कारण पूछना भी ठीक नहीं समझा।

न्यायमूर्त्ति बना खरगोश स्वयं ही बोला, "मुझे आने में देर हो गई, आप लोग क्षमा करें। हुआ यह कि जब मैं आपके गांव आ रहा था तो मैंने देखा, नदी के बीच द्वीप पर आग लगी हुई है। मैं उसी आग को बुझाता रहा। मुझे वहां बांस की एक टोकरी मिली। मैं बस

[illegible] जाता, टोकरी भर पानी लाता और आग पर फेंक देता। सारा [illegible] इसी प्रकार करने पर बड़ी कठिनाई से आग पर काबू पा सका।"

[illegible] तो अपने को बहुत चतुर समझता था। उसे अपनी चतुराई [illegible] की सूझी। बोला, "पर महाराज, नदी के बीच द्वीप पर आग [illegible] लगी? फिर टोकरी से पानी किस प्रकार ले जा सकते हैं? वह [illegible] झर जायगा। यह बात तो अनहोनी लगती है, कुदरत के नियमों से मेल नहीं खाती।"

खरगोश गम्भीर हो गया। बोला, "तुम बहुत ठीक कहते हो। पर यह वैसे ही हुआ जैसे गाय एक बछेड़ी को जन्म दे और घोड़ा एक बछिया को। यह सब भी प्रकृति के नियम के विरुद्ध है। इसलिए चुपचाप अपनी बछिया को घर ले जाओ और भोंदूमल, को उसकी बछेड़ी वापस कर दो।"

गांववाले इस निर्णय से बहुत संतुष्ट और प्रसन्न हुए और भविष्य [illegible] न्यायमूर्त्ति शशा को ही अपने झगड़ों का फैसला कराने के लिए नियुक्त किया।

# खोपड़ीराज

जमुना बहुत गरीब घर की महिला थी। जब उसके पुत्र पैदा हुआ तो वह बड़ी हैरान हुई, क्योंकि शरीर के नाम पर बच्चे का केवल सिर ही था, धड़ नहीं था। उसके पति को पुत्र का यह रूप देखकर बड़ी लज्जा आई और वह उसे मार डालने पर उतारू हो गया। यह देखकर जमुना बोली, "यह चाहे कुरूप हो या सुन्दर, आखिर सन्तान तो है।" बच्चा बोला, "मां, मैं तुम्हारा ऋणी हूं। मैं एक अच्छा बेटा बनकर दिखाऊंगा और आप लोगों की बुढ़ापे में खूब देख-भाल करूंगा।"

जब जमुना ने यह बात अपनी पड़ोसिन से कही तो वह आश्चर्यचकित होकर उसे देखने आई और उसका नाम 'खोपड़ीराज' रख दिया।

एक दिन खोपड़ीराज ने अपनी मां से कहा, "मां, तुम मुझे राज सेठ के पास ले चलो।" सेठ के घर पहुंचने पर खोपड़ीराज

[illegible] बोला, "सेठ, मां को चांदी के एक हजार रुपये दो और मुझे अपने घर में नौकर रख लो। आप मुझे प्रदर्शनी में रख सकते हैं। मुझे देखने जो लोग आयंगे, आप उनसे पैसे वसूल कर लेना।"

सेठ बड़ा प्रसन्न हुआ। थोड़े ही दिनों में सेठ को प्रदर्शनी से एक हजार रुपये मिल गये।

कुछ दिनों बाद सात व्यापारी जहाज उस नगर में आये। खोपड़ीराज ने अपने सेठ से कहा, "सेठजी, आप मुझे इन व्यापारियों के हाथ हजार रुपये में बेच डालिए, मैंने आपकी बहुत सेवा की है।"

सेठ उसे चाहने लगा था, इसलिए जाने नहीं देना चाहता था। परन्तु खोपड़ीराज के बार-बार अनुरोध करने पर इसने उसे उन व्यापारियों के हाथ बेच दिया। थोड़े दिन बाद वे व्यापारी भी चले गये और खोपड़ीराज को भी साथ ले गये।

बन्दरगाह छोड़ने के कुछ घंटों बाद ही जोर का तूफान आया और खोपड़ीराज वाला जहाज दूसरों से अलग हो गया। तीन दिन बाद तूफान शान्त हुआ और जहाज रुक गया, ऐसा रुका कि चलने का नाम ही नहीं लिया। मल्लाहों ने कहा, "यह खोपड़ीराज ही अपने साथ दुर्भाग्य लाया है, इसे समुद्र में फेंक दिया जाय।"

खोपड़ीराज ने कहा, "मित्रो, धीरज रखो और मुझे मस्तूल के ऊपर बांध दो।"

उन्होंने ऐसा ही किया। खोपड़ीराज ने जोर से फूंक मारी और जहाज वेग से आगे की ओर बढ़ने लगा। मल्लाहों ने उसका आभार माना और कहा, "भविष्य में तुम अपने को नौकर मत मानना।" खोपड़ीराज उसी प्रकार फूंक मारता रहा और एक दिन वे लोग एक

सुन्दर द्वीप के निकट पहुंच गये। खोपड़ीराज ने यहीं रुकने को कहा। पर मल्लाहों ने कहा, "यह द्वीप हमारे देश से दूर नहीं है, परन्तु हम जानते हैं कि यहां दैत्य बसते हैं। इसलिए हम वहां नहीं जाना चाहते।"

इस पर खोपड़ीराज बोला, "मैं दैत्यों से नहीं डरता।"

अब हवा अपने आप बहने लगी थी। कुछ देर बाद खोपड़ीराज बोला, "मित्रो, अब आपका जहाज मेरी सहायता के बिना भी जा सकता है। मुझे इसी द्वीप पर छोड़ दो।" उन्होंने ऐसा ही किया और उसे वहीं छोड़ कर आगे बढ़ गये।

खोपड़ीराज समुद्र के किनारे बैठा रहा। सन्ध्या हुई और दैत्य समुद्र में नहाने आये। खोपड़ीराज ने उनसे मीठी-मीठी बातें कीं, और उनका दोस्त बन गया। कई महीने उन दैत्यों के साथ रहा। इस बीच उन्होंने उसे एक मन्त्र सिखा दिया। एक दिन खोपड़ी को अपना पुराना जहाज दिखाई दिया। उसने जोर से पुकारा। आवाज सुनकर उसके साथी मल्लाह जहाज को द्वीप के पास ले आये। मल्लाह खोपड़ीराज के साथ दैत्यों को देखकर घबराये, परन्तु खोपड़ीराज ने उन्हें भरोसा दिलाया कि दैत्य उनको कोई नुकसान नहीं पहुंचायंगे।

जब खोपड़ीराज मल्लाहों के साथ वापस जाने लगा तो दैत्यों ने उसे विदाई दी और एक टोकरी भर लाल उपहार में दिये। अपने नगर पहुंच कर उसने सब कीमती लाल मल्लाहों को बांट दिये और कहा, "यदि आप लोग मेरे अधीन रहकर काम करने को तैयार हों तो मैं तुम्हें और भी बहुत कुछ दूंगा।" मल्लाहों ने उसकी बात मान ली।

अब खोपड़ीराज ने अपने आदमियों से कहा कि वे उसे राजा के पास ले चलें।

राजमहल पहुंचकर उसने राजा को सन्देश भेजा कि वह राजकुमारी का ब्याह उससे कर दें और उसे युवराज बना दें।

राजा के मन्त्री उसे देखकर हंसे पड़े और बोले, "तुम बिना धड़ के सवार हो, तुम्हारे जहाज के आवारा मल्लाह हैं।"

खोपड़ीराज को गुस्सा आ गया और उसने अपनी सुंघनी की डिबिया निकालकर कुछ सुंघनी निकाली और मन्त्र फूंका। तुरन्त न जाने कहां से हजारों घुड़सवार सिपाही प्रकट हो गये और उन्होंने राजमहल को घेर लिया। राजा के पास बचने का और कोई चारा नहीं था। उन्होंने खोपड़ीराज की सब शर्तें मान लीं।

खोपड़ी ने राजकुमारी से ब्याह कर लिया। विवाह होते ही वह एक सुन्दर राजकुमार के रूप में बदल गया। फिर उसने अपने मां-बाप को भी राजमहल में बुला लिया, और सब बड़े आनन्द से रहने लगे।

# विपत्ति का सामना

किसी सड़क पर एक ओर एक बड़ा पेड़ था। उससे खूब छाया होती थी। गर्मी के दिनों में यात्री उसके नीचे विश्राम करते। इस पेड़ के पास ही बांस के भी कुछ लम्बे-लम्बे पेड़ थे। बड़ा पेड़ बहुत घने

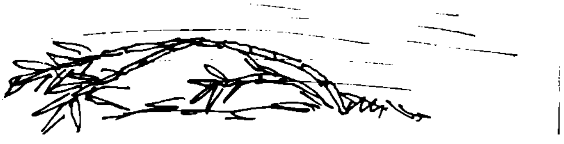

पेड़ वाला था। उस पर बहुत से पक्षियों ने घोंसले बना लिये थे। चरवाहे भी उस पेड़ के नीचे बैठकर बंसी बजाते और गपशप करते।

आस-पास के बच्चे भी पेड़ के नीचे बैठकर खेल खेलते थे। पेड़ यह सब देखकर प्रसन्न होता था और मुस्कराता था। उधर उन बांस के पेड़ के पास न कोई आदमी जाता, न कोई परिंदा ही फटकता। बांस मन में ईर्ष्या करता और स्वयं को अकेला महसूस करता था। इसकी ईर्ष्या का कारण पेड़ को मालूम था, पर वह चुप रहता, मानो उसे कुछ भी मालूम न हो।

एक दिन जब सब छोटे-छोटे बच्चे पेड़ के नीचे खेल रहे थे, बांस चुपचाप देख रहा था। उनमें से एक ने पेड़ से कहा, "भाई, तुम्हारे सुन्दर-सुन्दर पक्षी अब हमारे ऊपर बैठकर खूब गाते हैं।"

पेड़ ने उनकी बात अनसुनी कर दी। तब बांस ने दूसरी बार जोर से चिल्लाकर कहना शुरू किया, "क्या तुम्हें सुनाई नहीं दे रहा ? मैं तुमसे क्या कह रहा हूं ? क्या तुम बहरे हो ?" पेड़ बोला, "तुम यह मत समझो कि मैं गलत समझ रहा हूं या मुझे घमण्ड है। मैं तो राहगीरों को छाया देता हूं। उनकी थकावट दूर होती है। यह मेरा कर्तव्य है कि जो मेरी शरण में आये, उसे सुख दूं।"

बांस को बुरा लगा।

पेड़ ने सोचा—जब वह मुसीबत में पड़ेगा तो मेरी बात समझ जायगा। बोला, "एक दिन तुम्हें मेरे अच्छे विचार का पता लग जायगा। मैं तुम्हारे कहने से जरा भी नाराज नहीं हूं।" पेड़ बांस की बातों से उदास हुआ और अपने कानों को बन्द कर लिया। सोचा, मूर्ख है ! उसका दिमाग ठिकाने नहीं है।

ग्रीष्म ऋतु बीत गई और पुनः वर्षा का आगमन हो गया। अब वृक्ष सोचने लगा—'मैं कितना महान हूं। हरी-हरी ताजी टहनियां फूट रही हैं। नये-नये कोमल पत्ते भी निकल रहे हैं।'

इतने में भयानक शोरगुल सुनाई देने लगा। लोग चिल्ला रहे थे, "तूफान की चपेट में आ गया, परन्तु बांस डटकर वहीं खड़ा-खड़ा बहादुरी से बवण्डर का सामना करने लगा। पेड़ की कुछ शाखाएं झुक गईं, कुछ टूटकर नीचे गिर पड़ीं। परन्तु वह घबराया नहीं।"

जब तूफान का वेग कम हो गया, चिड़िया बोलने लगी, "हम डर गये थे। अच्छा हुआ जो हम बांस पर जा बैठे।" मां-चिड़िया ने कहा, "अब कोई भय नहीं है।"

बांस बोला, "ओ पेड़ भाई, तुम्हें क्या हो गया है? कितने बदसूरत बन गये हो। कितनी चोटें लगीं। कितने अंग टूटकर अलग हो गये। तुमने घमण्ड किया और तुम्हें हैरानी उठानी पड़ी।"

पेड़ ने कहा, "मुझे यह हैरानी हुई, वह मेरे घमण्ड के कारण नहीं बल्कि सच यह है कि मौसम के कष्ट का सामना न कर सका। मैं पहले की तरह सुखी हूं। देखो, बांस! मुझे चोटों, कष्टों और दण्ड की चिन्ता नहीं है। जो कुछ हुआ, वह ऋतु के कारण हुआ। मुझे इसका गर्व है। तुम्हारी तरह नहीं कि इतने लम्बे होते हुए भी झुक गये। मैं तुम्हारी तरह हवा के झोंकों के सामने अपने लिये नहीं जी रहा था। मैं अपनी सुखद छाया के नीचे जो यात्री, पशु-पक्षी आकर आश्रय लेते हैं, उनके लिए जी रहा हूं। जो बड़े हैं, वे झुक जाते हैं, एक ओर ही। मैं दूसरों के सामने नहीं झुकता। मेरा यह पक्का निश्चय है।" जो पेड़ कभी नाराज नहीं हुआ था, वह दुखित होकर जोर से चिल्ला उठा।

मां-चिड़िया पास के बांस पर बैठी हुई थी। अपने बच्चों को अपने गले लगाया और उनका डर दूर करते हुए बोली, "बच्चो, डरो मत। तुम्हारी मां तुम्हें अपनी गोद में लिये बैठी है। बच्चो, क्या तुम जानते हो कि पेड़ और बांस दोनों में कौन ठीक कहता है ?"

बच्चे बोले, "नहीं, हम नहीं जानते।"

"जो एक ओर झुक जाता है यानी किसी की तरफदारी कर लेता है वह देखने में तो ठीक लगता है, पर एक दिन वह मुसीबत में पड़ जाता है। ओह ! हम भी शायद बांस के बुरे विचारों से प्रभावित हो जायंगे। आओ, बच्चो, चलें, पेड़ पर आराम करें। पेड़ हमारा स्वागत कर रहा है। हम उससे विपत्ति का सामना करने का पाठ सीखें।"

# अंगुष्ठराज

**ब**हुत समय की बात है। एक निर्धन स्त्री धान सुखा रही थी। वह जब भी धान बिखेरती, सूरज छिप जाता। जब वह धान इकट्ठा करती तो कभी वर्षा आ जाती, कभी धूप निकल आती। ऐसा कई बार हुआ। इससे उसे चिढ़ आई और सूरज पर क्रोध आया। उसने सूर्य देवता को भला-बुरा कहा। सूर्य देवता भी गुस्से में लाल हो गये और उन्होंने उस स्त्री को शाप दिया, "तेरे जो बच्चा पैदा होगा वह बहुत छोटा—अंगूठे जितना—ही होगा।"

समय पाकर स्त्री के एक बच्चा हुआ। वह सचमुच अंगूठे जितना ही बड़ा था। उसका नाम 'अंगुष्ठराज' रख दिया गया।

अंगुष्ठराज को दूसरे बच्चे देखकर बड़ी ग्लानि होती। वे उसे 'अंगुष्ठवा' ही बुलाते और अपने साथ खेलने भी न देते। जब वह सोलह वर्ष का हो गया तब भी अंगूठे जितना ही रहा। उसकी मां ने उसे बता दिया कि सूर्य देवता के शाप से ही वह इतना छोटा रह गया है। उसने निश्चय किया कि वह सूर्य देवता से युद्ध करेगा और उसे हरा देगा। उसने मां से कहा, "रास्ते में खाने के लिए मुझे कुछ सत्तू दे दो।"

मां ने एक पोटली में सत्तू बांध दिये और वह चल पड़ा। बड़ी गर्मी थी, जिसके कारण चारों ओर के खेत सूखे पड़े थे। आगे चलकर उसे एक नदी मिली, जिसमें पानी सूख जाने के कारण किनारे पर एक नाव पड़ी हुई थी। नाव बोली, "अंगुष्ठराज! कहां जा रहे हो?" वह बोला, "मैं सूरज से लड़ने जा रहा हूं।" नाव बोली, "मैं भी तुम्हारे साथ चलना चाहती हूं, क्योंकि सूरज ने नदी का सारा पानी सुखा दिया है। मैं कहीं भी आ-जा नहीं सकती। वह मेरा शत्रु है। पास खाने को जो लाये हो खा लो और मेरे अन्दर बैठ जाओ।" अंगुष्ठराज ने ऐसा ही किया। कुछ आगे बढ़े तो एक कांटेदार बांस मिला। उसने भी अंगूठे से पूछा, "भाई, आप दोनों कहां जा रहे हो?" उत्तर मिला, "सूर्य देवता से लड़ने। वह हमदोनों का शत्रु है।" बांस बोला, "क्या मुझे भी साथ ले चलोगे? मैं भी उससे लड़ूंगा। उसने मेरे सब संगी-साथियों को सुखाकर मार डाला है। मैं उससे बदला लूंगा।" अंगूठा बोला, "लो, थोड़ा सत्तू खा लो और मेरे साथ चलो।" बांस भी उसके साथ हो लिया।

इसी प्रकार चलते-चलते कुछ काई मिली। उसके पूछने पर भी वही उत्तर दिया कि हम सूरज से लड़ने जा रहे हैं। काई बोली, "देखो, हमारे सुन्दर-सुन्दर मुलायम-मुलायम हरे-हरे शरीरों को सूरज ने सुखाकर कितना खुरदरा बना दिया और हमें भस्म कर दिया है। मैं भी उससे बदला लेना चाहती हूं। मुझे साथ ले चलो।"

"ठीक है। कुछ सत्तुआ खा लो और मेरे साथ चलो।" आगे चले तो एक सड़ा अण्डा मिला। वह भी साथ चलने को तैयार था, क्योंकि उसके माता-पिता (मुर्गे-मुर्गियों) को सूरज ने बिना पानी के प्यासा मार डाला था। इस प्रकार सब मिलकर सूरज से लड़ने पूर्व दिशा की ओर चले। रात होने पर एक पहाड़ के नीचे गये। दूसरे दिन सवेरे उसी पहाड़ी की ओट से सूरज को निकलना था। रात बिताने के लिए पास ही एक पुराना घर दिखाई दिया। अंगुष्ठराज ने अनुमान लगाया कि यह घर किसी मनुष्य का न होकर किसी दैत्य का होगा। मनुष्य इस प्रकार दूर सुनसान जंगल में नहीं रहते। भीतर जाकर देखा तो घर खाली था। अंगूठे ने सोचा—'यह दैत्य यहां आकर रात को सोएगा। इसलिए पहले उसे हरा दें। तभी घर में आराम से सो सकेंगे।'

उसके तीन साथियों—बांस, सड़े अण्डे और काई—ने कहा, "अंगुष्ठराज! आप मत लड़ना। हम दैत्य को मार लेंगे। आपको कल बड़ी लड़ाई लड़नी है। आप अपनी शक्ति आज व्यर्थ मत खोओ।" अंगूठा अब एक झाड़ी की ओट में छिपकर बैठ गया।

इन तीनों ने घर में घुसकर सबसे पहले दियासलाई की डिबिया छुपा दी। उसके बाद बांस अपने कांटों सहित उसकी खाट के नीचे जा बैठा। सड़ा अण्डा चूल्हे के पास चला गया और काई पानी के

घड़े के पास जा बैठी। दैत्य आकर बिस्तर पर लेट गया। नीचे से तुरन्त बांस ने कांटे घुमाने आरम्भ कर दिये। "अरे, इतनी चीटियां कहां से आ गईं ?" इतना कहकर उन्हें हटाने के लिए दैत्य डिब्बी ढूंढ़ने लगा। पर वह नहीं मिली। वह रसोईघर में दियासलाई ढूंढ़ने गया। जैसे ही वह चूल्हे के पास पहुंचा, अण्डा बड़े जोर से फटा और चूल्हे की बहुत-सी राख उड़कर दैत्य की आंखों में पड़ गई। आंखें धोने के लिए पानी के घड़े के पास गया तो काई रास्ते में बिछी पड़ी थी। वह फिसलकर गिर पड़ा और उसकी गर्दन की हड्डी टूट गई। थोड़ी देर में उसके प्राण-पखेरू उड़ गये। अब सब आराम से सो गये।

अगले दिन सवेरे ही अंगुष्ठराज और उसके साथी सूरज से लड़ने को तैयार हो गये। जैसे ही पहाड़ के पीछे से सूरज का सिर दीखा, उन्होंने लड़ने के लिए ललकारा। सूरज लाल था। ललकार से वह और भी लाल और गर्म हो गया। ये चारों घबराने लगे। गर्मी के मारे उनके शरीर सूखने लगे। तब एक चमत्कार हुआ। वर्षा बहुत दिनों से इस ताक में थी कि कोई वीर सूरज को युद्ध के लिए ललकारे। उसने इनको देखा तो सहायता के लिए आई और आक्रमण कर सूरज को डुबो दिया। चारों साथी बहुत प्रसन्न हुए, परन्तु थोड़ी देर में उनकी खुशी गायब हो गई। वर्षा इतनी हुई कि चारों ओर बाढ़ आ गई और अंगुष्ठराज डूबने को हो गये। तभी झट से नाव निकल आई और बोली, "सबलोग मुझ पर बैठ जाओ।" अंगुष्ठराज की जान-में-जान आई। सब खुशी-खुशी अपने घर पहुंचे।

# इन्द्रधनुष

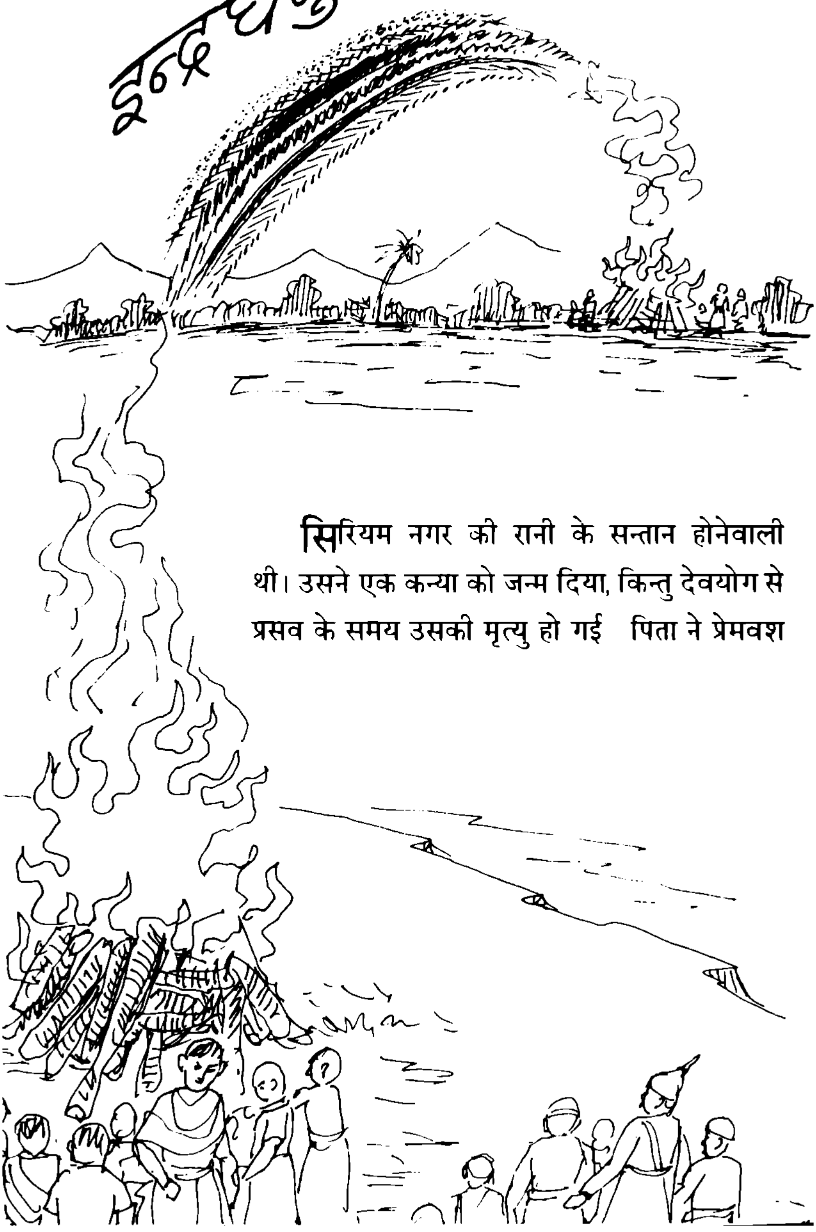

सिरियम नगर की रानी के सन्तान होनेवाली थी। उसने एक कन्या को जन्म दिया, किन्तु देवयोग से प्रसव के समय उसकी मृत्यु हो गई   पिता ने प्रेमवश

उसका नाम कुमारी 'रत्ना' रखा। रत्ना पैदा तो हो गई, लेकिन नगर में लोगों को आशंका थी कि जन्म से ही उसकी मां मर गई, इसलिए वह नगर पर दुर्भाग्य लायगी। राजा ने शहर के बाहर उसके लिए एक महल बनवा दिया। धीरे-धीरे वहां एक उपनगर बस गया और उसका नाम 'डल्ला' पड़ गया।

सिरियम से उस पार मंगलपुर की राजधानी थी। उसका राजकुमार नंदन डल्ला की इस राजकुमारी पर मोहित हो गया, परन्तु मंगलपुर के राजा और प्रजा दोनों ही इस सम्बन्ध से असंतुष्ट थे। उन्हें डर था कि वह लड़की उनके राज्य पर भी संकट ला सकती है। राजा ने मुनादी कर दी कि किसी का भी डल्ला के इस पार से उस पार जाना मना है। यह मंगलपुर मेघवर्ण घड़ियाल के स्थान से बहुत निकट था। एक दिन राजकुमार नदी के पार टकटकी लगाकर देख रहा था। मेघवर्ण ने कहा कि वह उसे उस पार ले जायगा। राजकुमार बहुत प्रसन्न हुआ। उसने मेघवर्ण से कहा, "परन्तु मुझे तो ऐसे जाना है कि किसी को पता ही न लगे। मेरे पिता को तो बिल्कुल ही मालूम न हो।"

मेघवर्ण बोला, "कोई चिन्ता की बात नहीं। रात होने पर मैं आपको अपने मुख में रखकर ले जाया करूंगा और भोर होते ही वापस ले आया करूंगा। मैं इतनी तेज तैरूंगा कि मेरे मुख में आपको बहुत देर तक रहना भी नहीं पड़े।"

इस प्रकार राजकुमार हर रोज रात को अपनी प्रियतमा रत्ना के पास जाने लगा। संयोग से एक दूसरी घड़ियालिन इस मेघवर्ण को चाहने लगी, परन्तु मेघवर्ण ने उसके प्यार को ठुकरा दिया तो वह मेघवर्ण की शत्रु बन गई और उसे मार डालने के उपाय सोचने

लगी। उसने एक दासी का रूप धारण किया और रत्ना के यहां नौकरानी बनकर काम करने लगी। वह चालाक तो थी ही—अपनी चिकनी-चुपड़ी बातों में रत्ना को फंसा लिया और उसकी मुंहलगी दासी बन गई। एक दिन वह रत्ना से बोली, "जब राजकुमार रात को आता है तो आप उसके दाहिनी ओर लेटती हैं कि बाईं ओर ?" रत्ना बोली, "बाईं ओर।" दासी बोली, "इसका मतलब है कि वह आपको प्यार नहीं करता। अगर प्यार करता तो दाहिनी ओर लेटने को कहता।"

रत्ना बोली, "वह मुझे दाहिनी ओर भी लेटने को मान जायगा। आज रात कहकर देखूंगी।" दासी जानती थी कि ऐसे लेटने पर राजकुमार पर विपत्ति आ सकती है। राजकुमार पर मुसीबत आने से मेघवर्ण को भी सजा मिलेगी। इस प्रकार वह मेघवर्ण से अपनी दुश्मनी का बदला ले लेगी।

रात को राजकुमार नंदन आया तो रत्ना ने उससे दाहिनी ओर लेटने का प्रस्ताव रखा। नंदन बोला, "जानती हो ! तुम्हारे इस ओर लेटने से मुझ पर विपत्ति आ सकती है ?"

रत्ना ने जिद्द की और कहा, "मेरी बात तुम इसलिए नहीं मानते, क्योंकि तुम्हें मुझसे सच्चा प्यार नहीं है।"

राजकुमार को उसकी जिद्द के सामने झुकना पड़ा और उसे अपनी दाहिनी ओर लेटने दिया।

सवेरा हुआ। नंदन नदी किनारे गया। मेघवर्ण उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। नंदन उसके मुख में बैठ गया। मेघवर्ण दूसरे किनारे की ओर चला। उस दिन अचानक नदी की धार

बहुत तेज हो गई। सामने एक बड़ी नाव आ रही थी। मेघवर्ण को नदी पार करने में प्रतिदिन से तीन गुना समय लग गया। इतनी देर उसका मुख बन्द रहा और बेचारे नंदन का दम घुट गया और वह मर गया। किनारे पहुंच कर उसने देखा कि दिन भी चढ़ आया है और राजकुमार का पिता सिपाहियों को लिये नदी किनारे बैठा है। मेघवर्ण ने राजा के चरणों में नंदन का मृतक शरीर रख दिया और आदि से अन्त तक सारी बात बता दी। उसने कहा, "महाराज, दोष मेरा है, इसलिए मुझे जो भी दण्ड देना हो, दे दीजिये।"

राजा को बहुत दुःख हुआ। बोला, "मेघवर्ण, तुम तो नंदन के स्वामिभक्त सेवक रहे हो। मैं तुम्हें क्षमादान देता हूं। एक काम करो। वापस तैरकर जाओ और राजकुमारी को भी नंदन के मरने का शोक समाचार दे आओ।"

मेघवर्ण ने जाकर रत्ना को नंदन के मरने की खबर दी। रत्ना को लगा कि नंदन की मृत्यु का कारण वही है। उसी ने उसको दाहिनी ओर लेटने की जिद्द की थी। यह उसी का दुष्परिणाम है। उसे इतना सदमा पहुंचा कि वह तुरन्त मर गई।

अगले दिन शाम को नदी के इस ओर नंदन की चिता जल रही थी, दूसरी ओर राजकुमारी रत्ना की। लोगों ने देखा कि दोनों चिताओं से धुएं के बादल ऊपर उड़कर आकाश में मिल गये और वहां एक इन्द्रधनुष बन गया।

# सबसे बड़ा मूर्ख

एक बड़ा समृद्ध शहर था। उसका प्रशासक बहुत बुद्धिमान था। उसने एक दिन अपने मंत्री को बुलाकर कहा, "भद्रसेनजी, मैं चाहता हूं कि हमारे नगर में केवल बुद्धिमान और चतुर लोग ही रहें। इसलिए मूर्खों और बुद्धू लोगों को भी चतुर बनाया जाना चाहिए। आप बुद्धुओं और मूर्खों की एक सूची बना डालें।"

सूची बनाई जाने लगी। इन्हीं दिनों एक व्यक्ति आया और उसने अपने आपको उत्तम घोड़ों का व्यापारी बतलाया। मीठी बातों से

प्रशासक को मोह लिया। घोड़ों की उत्तम नस्लों के नाम और गुणों का बखान किया।

प्रशासक को एक विशेष किस्म का घोड़ा पसन्द आया। उसने उस व्यापारी से सौदा कर लिया और उसे कुछ रुपया पेशगी दे दिया।

एक सप्ताह बाद पदाधिकारी ने मंत्री द्वारा बनाई सूची देखी तो आग बबूला हो गया। उसने देखा कि उस सूची में उसका नाम सबसे पहला था।

बोले, "भद्रसेन, यह क्या है?"

उसने कहा, "श्रीमानजी, आपने बिना कुछ सोचे-समझे, बिना किसी जानकार से पूछताछ किये घोड़े का मुंहमांगा दाम स्वीकार कर लिया और रुपया पेशगी भी दे दिया। क्या आप जानते हैं कि वह कौन था और कहां से आया था? इसीलिए मैंने आपका नाम सबसे ऊपर रखा है।"

पदाधिकारी बोला, "अच्छा, अगर वह वापस आ जाय और माल ले आय तो?"

मंत्री बोला, "तब आपका नाम काटकर वहां उसका लिख दूंगा।"

सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन